संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ १०
प्रकाशन दिनांक :
१ दिसम्बर २०१३
वर्ष : २३ अंक : ६
(निरंतर अंक : २५२)

सत्य की विजय

न्यायालय का फैसला

शंकराचार्यजी निर्दोष

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी की गिरफ्तारी के विरोध में जंतर-मंतर, दिल्ली में धरना, उपवास आंदोलन का नेतृत्व किया था। पूज्य बापूजी ने घोषणा की थी कि 'निर्दोष शंकराचार्यजी को फँसाया जा रहा है, अंत में सत्य की विजय होगी।'

अधिकांश मीडिया ने स्वार्थी व पक्षपाती रवैया अपनाकर शंकराचार्यजी को मीडिया ट्रायल द्वारा दोषी घोषित किया था। यही अत्याचार निर्दोष बापूजी के साथ भी दोहराया जा रहा है।

संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं। मीडिया में बापूजी के ट्रायल का हम विरोध करते हैं।

– श्री अशोक सिंहल
अंतर्राष्ट्रीय संरक्षक, वि.हि.प.

राजनैतिक षड्यंत्र के तहत ही हिन्दू आस्था, हिन्दू मानबिंदुओं व हिन्दू संतों पर कुठाराघात किया जा रहा है। मठ-मंदिरों में सरकार कब्जा जमाने का प्रयास कर रही है। सरकार अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए अब हिन्दू संतों को अपना निशाना बना रही है। संत आशारामजी बापू के मामले में जल्द ही दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जायेगा।

– जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी, जगन्नाथपुरी मठ, ओड़िशा

झूठी और सच्ची खबरों में अंतर

मीडिया

ब्रजबिहारी गुप्ता को मीडिया ने आचार्य भोलानंद इस फर्जी नाम से पेश करके आरोप लगवाया : ''बापू के जम्मू आश्रम में बच्चों को दफनाया गया है ।''

सच्चाई

जम्मू पुलिस की जाँच-पड़ताल में आरोप निराधार साबित हुआ । जालसाज भोला द्वारा बच्चों के कंकाल आश्रम में गड़वाने की साजिश रची गयी । साजिश का पर्दाफाश हुआ और ठग भोला के खिलाफ साजिश रचना, अपराध के लिए दूसरों को उकसाने और धर्मस्थान को नुकसान पहुँचाने के जुर्म में एफआईआर दर्ज हुई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया ।

मीडिया

''आश्रम में कमरा नम्बर ३०२ में गर्भपात कराया जाता था । संचालिका ध्रुव बहन यह कार्य करवाने हेतु लड़कियों को ले जाती थी ।''

सच्चाई

'गुजरात महिला आयोग' ने महिला आश्रम में घंटों तक पूछताछ व जाँच-पड़ताल की और स्पष्ट किया कि यह आरोप झूठा है । संचालिका ध्रुव बहन ने आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि ''ऐसा कुछ भी मैंने न ही किया है, न देखा है और न ही सुना है ।''

मीडिया

''सेवादार शिवा की हुई थी शादी और उसने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ दिया ।''

सच्चाई

शिवा भाई को बदनाम करने के लिए बनायी गयी थी बिल्कुल झूठी कहानी । जिस व्यक्ति के माता-पिता व पत्नी-बच्चों को दिखाया गया था, वह 'सुरेश चौधरी' नाम का दूसरा व्यक्ति है । जो व्यक्ति जीवित हो, उसके नाम, गाँव तथा माता-पिता को ही बदल के रख देना तथा एक अविवाहित व्यक्ति को विवाहित घोषित कर उसकी संतानें भी पैदा कर देना - यह है मीडिया की साजिश !

मीडिया

''पिछले ५ साल में संत श्री आशारामजी गुरुकुलों की ११वीं तथा १२वीं कक्षा की ९८५ छात्राएँ भागकर चली गयी हैं और २० से ज्यादा छात्राओं ने खुदकुशी कर ली है ।''

सच्चाई

कोई भी छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं भागी है और आज तक गुरुकुल की किसी भी छात्रा ने खुदकुशी नहीं की है । इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, छिंदवाड़ा ने भी RTI (सूचना का अधिकार) के तहत कर दी है ।

मीडिया

''आशाराम बापू के खास सेवादार शिवा के पास से पुलिस को आशाराम बापू के कई अश्लील विडियो क्लिप बरामद हुए हैं ।''

सच्चाई

शिवा भाई : ''मेरे साथ पुलिस द्वारा जबरदस्ती की जा रही थी । पुलिस ने मेरी चोटी उखाड़ दी, मेरे को बहुत मारा-धमकाया कि जो हम बोलें वह तुझे बोलना है । मेरे पास पेपर भी लाये कि तुम्हारे पास से हमें सीडी मिली है - ऐसा हस्ताक्षर करके स्वीकार करो । जबकि मेरे पास कोई सीडी नहीं है ।'' डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने भी स्वीकार किया : ''हमें कहीं से कोई भी सीडी, कोई मूवी या विडियो क्लिप बरामद नहीं हुई है । ये तथ्यहीन बातें हैं ।''

मीडिया

''आश्रम में काला जादू होता है ।''

सच्चाई

सीआईडी ने जाँच करने के बाद कहा : ''आश्रम में तांत्रिक विधि नहीं होती ।'' सर्वोच्च न्यायालय ने दिनांक ९-११-१२ को दिये फैसले में इस प्रकार के सभी आरोपों को पूरी तरह खारिज कर दिया ।

पिछले तीन महीनों से पूज्य बापूजी सहित उनके पूरे परिवार और आश्रमों पर मीडिया व साजिशकर्ताओं द्वारा लगाये जा रहे सारे आरोप इन्हीं आरोपों की तरह झूठे, मनगढ़ंत और बेबुनियाद हैं ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५२)
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०१३
मूल्य : ₹ १०
मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ.प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

'प्रणव' (ॐ) की महिमा

(चतुर्दशी आर्द्रा नक्षत्र योग : १४ जनवरी)

सूतजी ने ऋषियों से कहा : ''महर्षियो ! 'प्र' नाम है प्रकृति से उत्पन्न संसाररूपी महासागर का। प्रणव इससे पार करने के लिए (नव) नाव है। इसलिए इस ॐकार को 'प्रणव' की संज्ञा देते हैं। ॐकार अपना जप करनेवाले साधकों से कहता है - 'प्र-प्रपंच, न-नहीं है, वः-तुम लोगों के लिए।' अतः इस भाव को लेकर भी ज्ञानी पुरुष 'ॐ' को 'प्रणव' नाम से जानते हैं। इसका दूसरा भाव है : 'प्र-प्रकर्षेण, न-नयेत्, वः-युष्मान् मोक्षम् इति वा प्रणवः। अर्थात् यह तुम सब उपासकों को बलपूर्वक मोक्ष तक पहुँचा देगा।' इस अभिप्राय से भी ऋषि-मुनि इसे 'प्रणव' कहते हैं। अपना जप करनेवाले योगियों के तथा अपने मंत्र की पूजा करनेवाले उपासकों के समस्त कर्मों का नाश करके यह उन्हें दिव्य नूतन ज्ञान देता है, इसलिए भी इसका नाम प्रणव - प्र (कर्मक्षयपूर्वक) नव (नूतन ज्ञान देनेवाला) है।

उन मायारहित महेश्वर को ही नव अर्थात् नूतन कहते हैं। वे परमात्मा प्रधान रूप से नव अर्थात् शुद्धस्वरूप हैं, इसलिए 'प्रणव' कहलाते हैं। प्रणव साधक को नव अर्थात् नवीन (शिवस्वरूप) कर देता है, इसलिए भी विद्वान पुरुष इसे प्रणव के नाम से जानते हैं अथवा प्र - प्रमुख रूप से नव - दिव्य परमात्म-ज्ञान प्रकट करता है, इसलिए यह प्रणव है।

यद्यपि जीवन्मुक्त के लिए किसी साधन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह सिद्धरूप है, तथापि दूसरों की दृष्टि में जब तक उसका शरीर रहता है, तब तक उसके द्वारा प्रणव-जप की सहज साधना स्वतः होती रहती है। वह अपनी देह का विलय होने तक सूक्ष्म प्रणव मंत्र का जप और उसके अर्थभूत परमात्म-तत्त्व का अनुसंधान करता रहता है। जब शरीर नष्ट हो जाता है, तब वह पूर्ण ब्रह्मस्वरूप शिव को प्राप्त कर लेता है - यह सुनिश्चित है। जो अर्थ का अनुसंधान न करके केवल मंत्र का जप करता है, उसे निश्चय ही योग की प्राप्ति होती है। जिसने इस मंत्र का ३६ करोड़ जप कर लिया हो, उसे अवश्य ही योग प्राप्त हो जाता है। 'अ' शिव है, 'उ' शक्ति है और 'मकार' इन दोनों की एकता यह त्रितत्त्वरूप है, ऐसा समझकर 'ह्रस्व प्रणव' का जप करना चाहिए। जो अपने समस्त पापों का क्षय करना चाहते हैं, उनके लिए इस ह्रस्व प्रणव का जप अत्यंत आवश्यक है।

वेद के आदि में और दोनों संध्याओं की उपासना के समय भी ॐकार का उच्चारण करना चाहिए।''

भगवान शिव ने भगवान ब्रह्माजी और भगवान विष्णु से कहा : ''मैंने पूर्वकाल में अपने स्वरूपभूत मंत्र का उपदेश किया है, जो ॐकार के रूप में प्रसिद्ध है। वह महामंगलकारी मंत्र है। सबसे पहले मेरे मुख से ॐकार (ॐ) प्रकट हुआ, जो मेरे स्वरूप का बोध करानेवाला है। ॐकार वाचक है और मैं वाच्य हूँ। यह मंत्र मेरा स्वरूप ही है। प्रतिदिन ॐकार का निरंतर स्मरण करने से मेरा ही सदा स्मरण होता है।

मुनीश्वरो ! प्रतिदिन दस हजार प्रणवमंत्र का जप करें अथवा दोनों संध्याओं के समय एक-एक हजार प्रणव का जप किया करें। यह क्रम भी शिवपद की प्राप्ति करानेवाला है।

'ॐ' इस मंत्र का प्रतिदिन मात्र एक हजार जप करने पर सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है।

प्रणव के 'अ', 'उ' और 'म्' इन तीनों अक्षरों से जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन होता है - इस बात को जानकर प्रणव (ॐ) का जप करना चाहिए। जपकाल में यह भावना करनी चाहिए कि 'हम तीनों लोकों की सृष्टि करनेवाले ब्रह्मा, पालन करनेवाले विष्णु तथा संहार करनेवाले रुद्र जो स्वयंप्रकाश चिन्मय हैं, उनकी उपासना करते हैं। यह ब्रह्मस्वरूप ॐकार हमारी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की वृत्तियों को, मन की वृत्तियों को तथा बुद्धि की वृत्तियों को सदा भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले धर्म एवं ज्ञान की ओर प्रेरित करे।' प्रणव के इस अर्थ का बुद्धि के द्वारा चिंतन करता हुआ जो इसका जप करता है, वह निश्चय ही ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। अथवा अर्थानुसंधान के बिना भी प्रणव का नित्य जप करना चाहिए।''

('शिव पुराण' अंतर्गत विद्येश्वर संहिता से संकलित)

भिन्न-भिन्न काल में 'ॐ' की महिमा

आर्द्रा नक्षत्र से युक्त चतुर्दशी के योग में (दिनांक १४ जनवरी २०१४ को सुबह ७-२२ से १५ जनवरी सुबह ७-५२ तक) प्रणव का जप किया जाय तो वह अक्षय फल देनेवाला होता है।

मुझे गर्व है बापूजी जैसे संत हमारे देश में हैं

- युवा संत प्रीतमजी महाराज

बापूजी के ऊपर जो आरोप लगाये जा रहे हैं, वे पूर्णरूप से झूठे, गलत और निराधार हैं। और रही बात आरोपों की, तो आरोप तो कोई भी किसीके ऊपर लगा सकता है। सबसे बड़ी बात है कि हर कार्य की एक समय-सीमा होती है। २००२ और २०१३ ये काफी लम्बा अंतर है। अगर उनके (लड़कियों के) साथ ऐसा हुआ था तो उनको तुरंत कार्यवाही करनी चाहिए थी लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। आजकल पैसे देकर किसीसे कुछ भी बुलवाया जा सकता है। यह एक षड्यंत्र है।

बापूजी प्रतिष्ठित और बहुत ही जाने-माने संत हैं। मैंने बापूजी को काफी करीब से देखा है। देश में जब-जब बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाएँ आयीं तो हजारों बेघर लोगों के लिए बापूजी ने मकान बनवाये, कपड़े, बर्तन आदि की व्यवस्था की। जहाँ प्रशासन नहीं पहुँचा वहाँ बापूजी द्वारा हजारों गरीब लोगों की सेवा करवायी गयी थी। उनके सेवाकार्यों को मीडिया ने कभी क्यों नहीं दिखाया ?

पूज्य बापूजी ने लोगों को सत्संग ही नहीं, सेवा, संस्कार, संस्कारों के साथ एक नयी दिशा, एक नयी पहचान और भारत को एक उन्नतिवाला देश बनाने की शक्ति दी है। जब षड्यंत्रकारियों को लगने लगा कि 'ऐसे महान संत हमारे देश में कार्य करेंगे, लाखों-करोड़ों जनता इनके पीछे है तो हमारी पोलें खुल न जायें' इसलिए इन्होंने बापूजी को फँसाने के लिए सारे षड्यंत्र रचे हैं। मगर बहुत ही जल्दी इन लोगों की हकीकत सामने आ जायेगी।

भारत की संस्कृति को बदनाम करने के लिए प्रमुख संतों को साजिश का शिकार बनाया जा रहा है। मुझे गर्व है कि हमारे देश में बापूजी जैसे महान संत हैं और अगर भगवान भी आकर कह दें तो भी मैं उस आरोप को नहीं मानता।

षड्यंत्रकारियों का षड्यंत्र विफल
सत्य और धर्म की हुई विजय
शंकराचार्यजी निर्दोष

कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी को उनके ही मठ के पूर्व प्रबंधक शंकर रमण की हत्या के मामले में फँसाया गया था। ९ साल तक चली सुनवाई के बाद सत्र न्यायालय ने उन्हें आरोपों से पूर्णतः बरी करते हुए निर्दोष घोषित कर दिया है । साथ ही कनिष्ठ शंकराचार्य विजेन्द्र सरस्वती समेत सभी २३ आरोपियों को भी निर्दोष बरी कर दिया है। न्यायालय के निर्णय से सत्य व धर्म की विजय हुई तथा **'सत्यमेव जयते'** और **'यतो धर्मः ततो जयः ।'** की उक्ति साकार हुई है।

पुलिस न्यायालय में हत्या के आरोप को सिद्ध नहीं कर सकी। केस से संबंधित कोई ठोस सबूत भी पेश नहीं कर पायी। द्वेषपूर्वक किया गया राजनैतिक षड्यंत्र तो असफल हो गया पर शंकराचार्यजी को २ माह तक जेल में रखा गया व सतत ९ वर्षों तक उनके मान-सम्मान को जो क्षति पहुँचायी गयी, उसकी भरपाई कौन करेगा ?

नवम्बर २००४ में निर्दोष शंकराचार्यजी को अपराधियों की तरह गिरफ्तार कर पुलिस हिरासत में उनके साथ पेशेवर अपराधियों जैसा व्यवहार किया गया था। उन्हें अपमानित किया गया व मानसिक कष्ट भी दिया गया । कई मीडियावालों ने झूठा कुप्रचार किया था कि शंकराचार्यजी ने अपराध कबूल कर लिया है जबकि पुलिस ऐसा कोई सबूत नहीं दे पायी थी । इससे पुलिस की भूमिका संदिग्ध साबित होती है। अतः पुलिस द्वारा देश के प्रतिष्ठित संतों पर गढ़े गये आरोपों पर समाज को अब विश्वास नहीं रहा । तमिलनाडु सरकार व पुलिस लानत के पात्र बन गये हैं। अब सवाल है कि निर्दोष शंकराचार्यजी के खिलाफ षड्यंत्र रचनेवाले अपराधियों को कब और क्या सजा मिलेगी ? क्या कोई उन्हें कभी खोजने की भी कोशिश करेगा ?

न्यायालय द्वारा शंकराचार्यजी को निर्दोष घोषित किये जाने के निर्णय को देशभर में सराहा जा रहा है। २००४-०५ में कुछ मीडिया घरानों ने निर्दोष शंकराचार्यजी को हत्यारे की तरह पेश कर जनता को गुमराह करने का अपराध किया था। न्यायालय का निर्णय आने से पहले खुद ही निर्णायक बनकर लाखों देशवासियों की धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात करनेवालों को क्या दंड नहीं मिलना चाहिए ?

साजिशकर्ताओं द्वारा हिन्दू साधु-संतों पर एक के बाद एक झूठ आरोपों की झड़ी लगा दी गयी है। स्वामी केशवानंदजी, नित्यानंदजी, कृपालुजी महाराज पर भी झूठे आरोप लगाये गये और स्वामी लक्ष्मणानंदजी की तो साजिशकर्ताओं द्वारा हत्या तक कर दी गयी। इन संतों पर लगाया गया कोई भी आरोप आज तक साबित नहीं हो पाया है।

२००४ में पूज्य बापूजी ने शंकराचार्यजी की गिरफ्तारी के विरोध में जंतर-मंतर, दिल्ली में धरना,

उपवास आंदोलन का नेतृत्व किया था। बापूजी ने घोषणा की थी कि 'निर्दोष शंकराचार्यजी को फँसाया जा रहा है, उन्हें जेल से शीघ्र ही रिहा किया जाना चाहिए। अंत में विजय सत्य की ही होगी।'

इसके बाद शंकराचार्यजी जेल से रिहा हुए और उन्होंने पूज्य बापूजी का आदर-सत्कार किया था। इसके बाद साजिशकर्ताओं द्वारा बापूजी पर भी झूठे आरोप लगाकर उन्हें बदनाम करने के प्रयास तेज हो गये। धर्मांतरण करानेवाली विदेशी ताकतें राजनैतिक सहारा लेकर अनेक प्रकार के षड्यंत्र बापूजी के खिलाफ रचती रही हैं। एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत बापूजी को झूठे आरोप में फँसाकर जोधपुर जेल में रखा गया है। पिछले साढ़े तीन महीनों से मीडिया द्वारा बापूजी को बदनाम करने के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, मनगढ़ंत कहानियाँ बनायी जा रही हैं। आम जनता को भ्रमित किया जा रहा है।

शंकराचार्यजी के निर्दोष साबित होने के बाद आम जनता का मीडिया की बिकाऊ खबरों पर से विश्वास उठ गया है। जनता को विश्वास है कि पूर्णतः निर्दोष बापूजी को भी न्यायालय जल्दी ही जमानत देगा व फिर बाइज्जत बरी भी करेगा।

बिल्कुल क्रांति होनेवाली है

- श्री राजेन्द्रशरण देवाचार्य, प्रवक्ता, निम्बार्क पीठ, मथुरा

भारतीय संस्कृति पुरातन संस्कृति है। इस पर प्रहार हुए हैं, बुरा वक्त आया है लेकिन इस प्राचीन पद्धति, परम्परा को कोई नष्ट नहीं कर सका है।

आज इतना बड़ा एक विश्वव्यापक ज्ञान का उद्घोष हो रहा है। उसको छिन्न-भिन्न करने के षड्यंत्र में अनेक विदेशी ताकतों का, धर्मांतरणवालों आदि का हाथ है और सरकार इनकी तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं देती है, कारण 'वोट' या और भी कुछ लगा लो।

शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी आदि संतों के साथ ऐसा हुआ और अब परम पूज्य संत आशारामजी बापू के साथ भी ऐसा हो रहा है। यह अपराध है और इस अपराध को संत-समाज कभी क्षमा नहीं करेगा। हिन्दू संतों के ही पीछे पड़े हैं, क्यों ? क्योंकि वे धर्म-संस्कृति की रक्षा करते हैं इसलिए न ? उनका तो जन्म ही इस काम के लिए हुआ है। अब अति हो गयी है। यह संत-समाज अब बैठनेवाला नहीं है। अखाड़ा बापूजी के ऊपर हो रहे अत्याचार का पुरजोर विरोध करेगा। षड्दर्शन साधु समाज भी इसके विरोध में है और बापूजी को सबका पूर्णतः सहयोग है।

संस्कृति की जो रक्षा करनेवाले हैं और जो हमारे धर्म के उद्घोषक हैं, उनके प्रति ऐसा अन्याय, ऐसा बर्ताव कोई छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा संत कभी सहन नहीं करेगा। आप संतों को दुबारा से १८५७ जैसी क्रांति, जो आनंदमठ से हुई थी, वैसी ही एक और क्रांति को जन्म देने को मजबूर कर रहे हैं। बिल्कुल यह क्रांति होनेवाली है। संतों व संस्कृति को बरबाद करना स्वयं को बरबाद करना है। उस सनातन धर्म को, जो भगवान के सृष्टि पैदा करने से पहले था, उस वैदिक संस्कृति को बरबाद करने के लिए तुले हैं तो खुद बरबाद हो जायेंगे।

पूज्य बापूजी और श्री नारायण साँईंजी के खिलाफ दर्ज एफआईआर का पोस्टमॉर्टम

- वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर

पूज्य बापूजी के खिलाफ जोधपुर और सूरत में घृणास्पद आरोप लगाकर एफआईआर दर्ज करवायी गयी यह बात आप सबको मालूम है । लेकिन एफआईआर में क्या लिखा है, कितनी सच्चाई है, उसमें कितनी झूठी बातें हैं - यह बात एफआईआर पढ़ने पर ही पता चल जाती है।

पहले हम उत्तर प्रदेश की लड़की द्वारा दिल्ली में दर्ज की हुई एफआईआर का परीक्षण करेंगे। वह लड़की खुद को नाबालिग बताती है और उसी समय यह भी कहती है कि 'मैं १२वीं कक्षा में पढ़ती हूँ।' ७वीं कक्षा में लड़की ने दो साल गुजारे हैं, विद्यालय का रिकॉर्ड इसका प्रमाण है । इस हिसाब से पहली कक्षा में प्रवेश लेते समय लड़की की उम्र ५ साल भी नहीं हो रही है, जबकि प्रवेश के लिए ६ साल या कम-से-कम ५ साल उम्र होना जरूरी है। वह बालिग है या नाबालिग है, यह ढूँढ़ने की कोशिश जोधपुर पुलिस या किसी चैनल ने नहीं की।

पाकिस्तान में रहनेवाला अजमल कसाब खुद को नाबालिग कहता था । उसका स्कूल प्रमाण-पत्र या जन्म प्रमाण-पत्र पाना मुमकिन नहीं था । कसाब पाकिस्तानी है - यह बात पाकिस्तान मानने को तैयार नहीं था। भारत के डॉक्टरों ने उसकी शारीरिक जाँच की और उसके बाद वह नाबालिग नहीं बालिग है - ऐसा निर्णय दिया, फिर मुकदमा हुआ । जोधपुर के केस में लड़की बालिग है या नाबालिग - इसकी मेडिकल जाँच होना अत्यावश्यक है । अहम बात यह है कि लड़की नाबालिग होने से गैर-जमानती 'पॉक्सो एक्ट' लागू होती है, जो आशारामजी बापू को फँसाने की साजिश का एक भाग है।

साजिश का अगला कदम था बापूजी और श्री नारायण साँईं पर सूरत में दो सगी बहनों को मोहरा बनाकर लगवाया गया बलात्कार और यौन-शोषण का आरोप। ये दोनों बहनें शादीशुदा हैं। इनमें से बड़ी बहन (उम्र ३३) ने बापूजी पर और छोटी बहन (उम्र ३०) ने नारायण साँईं पर आरोप लगाया है । लेकिन उनकी एफआईआर ही उनके झूठ और उनके साथ मिले हुए षड्यंत्रकारियों की सुनियोजित साजिश की पोल खोल देती है। आइये, नजर डालें उनमें लिखे कुछ पहलुओं पर :

बड़ी बहन का कहना है कि उसके साथ सन् २००१ में तथाकथित घटना घटी थी। २००२ में उसकी छोटी बहन आश्रम में रहने के लिए आयी थी । अगर किसी लड़की के साथ कहीं बलात्कार हुआ हो तो क्या वह चाहेगी कि उसकी छोटी बहन भी ऐसी जगह पर रहने आये ? कदापि नहीं। सवाल उठता है कि इसने अपनी छोटी बहन को आश्रम में आने से मना क्यों नहीं किया ? अगर वह सच कहने से डर भी रही थी तो वह कुछ भी बहाना बनाकर उसे आश्रम में आने से मना कर सकती थी। पर ऐसा नहीं हुआ, क्यों ?

कोई भी कुलीन स्त्री बलात्कार करनेवाले पुरुष से घृणा करने लगती है, उससे दूर जाने का प्रयास करती है, भले ही पुलिस में शिकायत न की हो। लेकिन यहाँ तो इस महिला (बड़ी बहन) का बापूजी के प्रति बर्ताव हमेशा अच्छा ही रहा था । एफआईआर में उसने जो बहुत गंदी बात लिखी है, वह अगर सच होती तो उस महिला से आश्रम छोड़ना अपेक्षित था लेकिन लड़की आश्रम की वक्ता बनी, प्रवचन किये, मंच पर से हजारों भक्तों के सामने बापूजी के गुणगान गाती रही। इसका मतलब यही है कि वह जो दुष्कर्म की बात कहती है ऐसा

कुछ हुआ ही नहीं।

बड़ी बहन कहती है कि ''२००१ में बलात्कार की घटना के बाद मैं बहुत डर गयी थी और आश्रम से भागना चाहती थी पर अवसर नहीं मिला।'' जबकि स्वयं उसने ही एफआईआर में लिखवाया है कि ''उसका दूसरे शहरों में भी आना-जाना चालू रहता था।'' वास्तविकता यह है कि प्रवचन करने हेतु वह विभिन्न राज्यों के कई छोटे-मोटे शहर जैसे - बड़ौदा, नड़ियाद, आणंद, भरूच, मेहसाणा तथा लुधियाना, राजपुरा, अमरावती, अहमदनगर आदि में अनेकों बार गयी थी। यहाँ तक कि वह सूरत में, जहाँ उसके पिता का घर है, वहाँ भी कई बार गयी। जब उसे टी.बी. की बीमारी हुई थी, तब भी वह घर गयी थी। तो क्या उसे ६ सालों तक किसी भी जगह से भागने का अवसर नहीं मिला होगा ? घरवालों को या पुलिस को बताने का अवसर नहीं मिला होगा ? उसे युक्तिपूर्वक भागने की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

बड़ी बहन ने एफआईआर में कहा है कि 'तथाकथित बलात्कार के बाद उसे गाड़ी में ले जाकर शालिग्राम बिल्डिंग के पास छोड़ा गया था और वहाँ से वह पैदल महिला आश्रम पहुँची।' शालिग्राम से महिला आश्रम आधा कि.मी. दूरी पर है। अगर लड़की की कहानी सत्य होती तो उसके पास वहीं से भागकर जाने का पर्याप्त मौका होते हुए भी वह वहाँ से क्यों नहीं भागी ? शालिग्राम के आसपास कई घर हैं, दुकानें हैं और वहाँ लोगों की भीड़ भी रहती है। ऐसे में वह घर भी जा सकती थी, किसीको मदद के लिए पुकार भी सकती थी, वहाँ से पुलिस स्टेशन भी जा सकती थी। उसने इसमें से कुछ भी क्यों नहीं किया ?

छोटी बहन ने आरोप लगाया है कि २००२ में सूरत में बापूजी की कुटिया में नारायण साँईंजी ने उसके साथ दुष्कर्म किया। उसके बाद वह घर चली गयी और फिर दूसरे ही दिन साँईंजी के हिम्मतनगर स्थित महिला आश्रम में चली गयी, जिसका कारण वह बताती है कि साँईं ने फोन करके वहाँ जाने को कहा था।

पहली बात, साँईं कभी बापूजी की कुटिया में नहीं रुकते। दूसरी सोचनेवाली बात है कि एक दिन उसके साथ दुष्कर्म हुआ और वह घर चली गयी और दूसरे दिन उन्हींके फोन पर, वह अपने घर जैसी सुरक्षित जगह को छोड़कर उनके आश्रम चली गयी और २ साल तक बड़े श्रद्धा-निष्ठा, समर्पणभाव से बतौर संचालिका वहाँ सेवाएँ सँभालीं। इसीसे साबित होता है कि उसके साथ कभी भी किसी तरह का दुष्कर्म हुआ ही नहीं और यह सिर्फ लोभवश साँईंजी के पवित्र दामन को कलंकित करने की सोची-समझी साजिश है।

छोटी बहन के अनुसार जब वह पुनः आश्रम में गयी तो उसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं हुई तो उसकी श्रद्धा फिर बैठ गयी और फिर २ साल तक उसके संचालिका पद पर कार्यरत रहने पर साँईं के आने पर हर बार उसके साथ दुष्कर्म होता रहा। ये सारी बातें बेतुकी और हास्यास्पद हैं कि २ दिन छेड़खानी नहीं हुई तो श्रद्धा फिर टिक गयी और फिर २ साल तक तथाकथित दुष्कर्म सहती हुई उनके आश्रम में टिकी रही ! जबकि हिम्मतनगर (गुज.) के गाम्भोई गाँव में बसे इतने खुले आश्रम से निकल जाने का मौका उसे कैसे नहीं मिला ? यही नहीं, उस महिला की स्थानीय लोगों से अच्छी जान-पहचान थी और उसका कई बार शहर और बाजार आना-जाना लगा रहता था।

छोटी बहन के अनुसार २००४ में वह आश्रम से उसके घर चली गयी थी और २०१० में उसकी शादी हो गयी। तब भी उसने माँ-बाप को ऐसा कुछ नहीं बताया और १ अक्टूबर २०१३ को ही उसने पहली बार पति को बताया और ६ अक्टूबर २०१३ को एफआईआर दर्ज की गयी। यह कैसे सम्भव है कि पीड़ित महिला ११ वर्षों तक अपने किसी सगे-संबंधी को अपनी व्यथा न बताये ! सालों बाद आरोप लगाने से मेडिकल जाँच तो हो नहीं सकती। बलात्कार के केस में मेडिकल रिपोर्ट की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

छोटी बहन के मुताबिक 'दुष्कर्म के बाद उसने नारायण साँईं के एक आश्रम की संचालिका का पद सँभाला। २ साल यह पद सँभालने के बाद वह आश्रम छोड़ के घर चली गयी। आश्रम की प्रमुख होने के नाते हिसाब-किताब पूरा करना जरूरी था इसलिए नारायण साँईं ने उसे फोन पर आने को कहा। हिसाब देने के लिए

वह घर से निकली और बीच में अपने किसी परिचित के घर रात को रुकी । वहाँ से वह आश्रम जानेवाली थी और यह बात उसने नारायण साँईं को फोन द्वारा बतायी भी थी।' आगे यह महिला लिखवाती है कि 'आश्रम द्वारा भेजी ६-७ महिलाओं ने सुबह के ढाई बजे उसके परिचित के घर पर पथराव किया, जिससे वह डर के वापस अपने घर चली गयी।' कैसी बोगस बातें हैं ! पथराव की बात सत्य होती तो मकान मालिक अथवा तो पड़ोसियों ने पुलिस में शिकायत की होती। पथराव हुआ इसका कोई सबूत नहीं है। अगर नारायण साँईं को इसे आश्रम बुलाना होता और जब यह खुद जाने को तैयार थी तो वे इसके घर पर पथराव भला क्यों करवाते ? इतनी समझ तो किसी साधारण आदमी को भी होती है।

छोटी बहन २००५ में आश्रम छोड़कर घर चली गयी थी। फिर भी बड़ी बहन ने उससे आश्रम छोड़ने का कारण नहीं पूछा और छोटी बहन ने भी अपनी बड़ी बहन को उसके आश्रम छोड़ने की वजह बताने की जरूरत नहीं समझी। क्या ऐसा सगी बहनों के रिश्ते में कभी हो सकता है ?

छोटी बहन बोलती है कि ''मैं डर के मारे झूठ बोलकर आश्रम से चली गयी। उसके ८ दिन बाद किसी महिला द्वारा संदेश मिलने पर मैंने नारायण साँईं को फोन किया।'' लेकिन जब वह आश्रम छोड़कर चली गयी थी तो किसी महिला द्वारा मात्र एक संदेश मिलने पर उसने सामने से नारायण साँईं को फोन क्यों लगाया ? इससे पता चलता है कि ऐसी कोई घटना घटी ही नहीं थी।

दोनों बहनों ने एफआईआर में लिखवाया है कि ''हम उनके धाक और प्रभाव के कारण किसीको कह नहीं पाते थे, आज तक किसीको नहीं कहा।'' २००८ में गुजरात के समाचार-पत्रों में सरकार ने छपवाया था कि आश्रम द्वारा कोई भी पीड़ित व्यक्ति अगर शिकायत करे तो पुलिस उसके घर जाकर उसकी शिकायत दर्ज करेगी और उसका नाम भी गोपनीय रखा जायेगा। ऐसा होने पर भी ये बहनें सामने क्यों नहीं आयीं ? अचम्भे की बात है कि बापूजी का तथाकथित धाक होने के बावजूद भी दोनों बहनों को आश्रम से जाने के ६-८ साल बाद, आज तक भी किसी प्रकार की कोई भी धमकी या नुकसान नहीं पहुँचा, उनके साथ सम्पर्क भी नहीं किया गया। जबकि बलात्कार करनेवाला व्यक्ति, जिसके देश-विदेश में करोड़ों जानने-माननेवाले हों, उसे तो सतत यह डर होना चाहिए कि 'कहीं यह बाहर जाकर मेरी पोल न खोल दे।' इसके विपरीत बापूजी और नारायण साँईं को तो ऐसा कोई डर कभी था ही नहीं।

गाँववालों से तफतीश करने पर पता चला कि दोनों लड़कियाँ आश्रम छोड़ने के बाद भी सत्संग में जाती थीं। और तो और, २०१३ में भी बारडोली (गुज.) में छोटी बहन साँईंजी के दर्शन करने आयी थी और उसके फोटोग्राफ एवं विडियो भी अदालत में प्रस्तुत किये गये हैं, जिसमें स्पष्ट दिख रहा है कि पति-पत्नी दोनों बड़े श्रद्धाभाव से साँईंजी के दर्शन कर रहे हैं। तो सोचने की बात है कि क्या कोई अपने साथ वर्षों तक दुष्कर्म और यौन-शोषण करनेवाले के प्रति इतनी निष्ठा व पूज्यभाव रख सकता है ?

अगर कोई सामान्य व्यक्ति भी एफआईआर के इन पहलुओं पर गौर करे तो यह स्पष्ट होने लगता है कि संत आशारामजी बापू और उनके सुपुत्र श्री नारायण साँईं को एक बड़ी साजिश के तहत फँसाया जा रहा है। ऐसे और भी कई पहलू हैं। कृपालुजी महाराज, स्वामी केशवानंदजी, स्वामी नित्यानंदजी आदि संतों के बाद पूज्य बापूजी व नारायण साँईं पर इस प्रकार के झूठे लांछन भारतीय संस्कृति पर प्रहार हैं। जब उपरोक्त संतों पर झूठे आरोप हुए तब तो उन आरोपों को खूब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया किंतु जब ये निर्दोष साबित हुए तब मीडिया द्वारा उसे जनता तक क्यों नहीं पहुँचाया गया ? यही बात पूज्य बापूजी के खिलाफ रचे गये अब तक के सभी षड्यंत्रों की पोल खुलने पर भी होती आयी है।

इतने सारे झूठ अपने-आपमें काफी हैं किसी भी प्रबुद्ध व्यक्ति को सच्चाई समझने के लिए। क्योंकि जो सच बोलता है या लिखता है उससे ऐसी गलतियाँ कभी

नहीं हो सकतीं । लेकिन जब मनगढ़ंत और झूठी कहानी पेश करनी होती है तो वहाँ कौन मौजूद था, कौन नहीं, क्या हुआ ? इसमें अक्सर गलतियाँ हो जाती हैं। अतः मेरी सभी देशवासियों से अपील है कि वे अपने स्वविवेक का उपयोग करके सत्य को देखें, न कि मीडिया के चश्मे से।

मीडिया कर रहा है गुमराह

नारायण साँईं कहीं भाग नहीं रहे थे, उन्होंने पहले ही सूरत के समाचार पत्रों में छपवा दिया था कि ''मैं कहीं भी भागा नहीं हूँ। उचित समय पर सामने भी आ जाऊँगा। मुझ पर लगे सारे आरोप झूठे और बेबुनियाद हैं। कानून के अनुसार हमने न्यायालय का आश्रय लिया है। न्यायप्रणाली पर हमें पूरा विश्वास है और न्यायिक प्रक्रिया के पूरा होने का इंतजार है। संविधान के तहत हर नागरिक अपने-आप पर लगे झूठे आरोपों से बचाव के लिए अग्रिम जमानत की अर्जी दे सकता है।''

साँईंजी देश की कानून-व्यवस्था का सहारा लेकर दुष्टों के षड्यंत्र से अपनी व अन्य निर्दोषों की रक्षा करने में लगे थे। अतः उनके खिलाफ अनर्गल भ्रामक प्रचार करना सर्वथा अनुचित है।

साँईंजी के आश्रमवासियों को मिल रही धमकियों के अनुसार षड्यंत्रकारियों के मंसूबे अत्यंत नापाक हैं। उन्होंने अपनी धमकियों में यहाँ तक कह दिया है कि 'हम उन्हें (साँईंजी को) जिंदा नहीं छोड़ेंगे। जहाँ भी दिखेंगे, जान से मार देंगे। बाहर नहीं मिले तो जेल में ही खत्म कर देंगे। हमारी पहुँच बहुत दूर तक है। एक-एक करके हम सारे आश्रम बरबाद कर रहे हैं। अब तक हमारी ताकत का अंदाजा तो तुम लोगों को आ ही चुका होगा।'

साँईंजी के जयपुर स्थित साहित्य-केन्द्र पर हुआ आतंकी हमला और निवासियों को दी गयी धमकी तथा तदनुसार दर्ज की गयी एफआईआर एवं पुलिस आयुक्त को सौंपी शिकायत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जानकारों के अनुसार ऐसे में साँईंजी का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना प्राणघातक हो सकता था। किसी भी माध्यम से जैसे खान-पान, चिकित्सा आदि के बहाने उनकी जान को खतरा होने से न्यायालय का फैसला आने तक अप्रकट रूप से कानूनी लड़ाई लड़ना ही सभी दृष्टियों से हितकर था। क्योंकि पूज्य बापूजी, नारायण साँईं और आश्रम के खिलाफ कई वर्षों से षड्यंत्र चल रहे हैं और ऐसे में कानूनी प्रक्रिया जब तक चल रही है, तब तक अपना बचाव करना उनका संवैधानिक अधिकार है। गुजरात उच्च न्यायालय ने गुजरात पुलिस और सूरत के सत्र न्यायालय को गलत ठहराते हुए साँईंजी के खिलाफ गैर-जमानती वॉरंट को रद्द कर दिया और साथ ही घोषित किया कि साँईंजी शुरुवात से लेकर आखिरी तक भगौड़े थे ही नहीं, उनको भगौड़ा कहना बिल्कुल गलत था।

श्रद्धा

ईश्वर के पथ के पथिक इसी प्रकार वीर होते हैं। उनके जीवन में चाहे हजार विघ्न-बाधाएँ आ जायें किंतु वे अपने लक्ष्य से च्युत नहीं होते । अनेक अफवाहें एवं निंदाजनक बातें सुनकर भी उनका हृदय गुरुभक्ति से विचलित नहीं होता क्योंकि वे गुरुकृपा के महत्त्व को ठीक से समझते हैं, गुरु के महत्त्व को जानते हैं । अपने सद्गुरु श्री तोतापुरी महाराज में श्री रामकृष्ण परमहंस की अडिग श्रद्धा थी । एक बार किसीने आकर उनसे कहा : ''तोतापुरी महाराज फलानी महिला के घर बैठकर खा रहे हैं । उन्हें आपने गुरु बनाया ?''

रामकृष्ण : ''अरे ! बकवास मत कर । मेरे गुरुदेव के प्रति एक भी अपशब्द कहा तो ठीक न होगा ।'' ''किंतु हम तो आपका भला चाहते हैं । आप तो माँ काली के साथ बात करते थे... इतने महान होकर भी तोतापुरी को गुरु माना ! थोड़ा तो विचार करें । वे तो ऐसे ही हैं । रामकृष्ण बोल पड़े : ''मेरे गुरु कलाल खाने जायें तो भी मेरे गुरु मेरे लिए तो साक्षात् नन्दराय ही हैं ।''

यह है श्रद्धा । ऐसे लोग तर जाते हैं । बाकी के लोग आधे में ही मर जाते हैं ।

सफलता की महाकुंजी : शिव-संकल्प

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

इधर (आश्रम में) एक वैष्णव साधु आया था, बोला : ''बाबाजी ! मुझे रहने दोगे ?''

मैंने कहा : ''साधु नहीं रहेगा तो कौन रहेगा यहाँ ?'' वह कई वर्ष रहा। उसका नाम मैंने विनोद में रखा था 'ब्रह्म'। एक दिन वह ध्यान में बैठा बड़ा मस्त हो रहा था। मैं पीछे खड़ा देख रहा था। मैंने कहा : ''ऐ ब्रह्म ! क्या कर रहे हो ?''

उसने कहा : ''मेरी प्रार्थना सफल हो गयी। गुरुजी ! भोग लगा दिया आपको।''

''कैसे ?''

''गुरुजी ! मैं सवा मन लड्डू का आपको भोग लगा रहा था।''

''ये कैसे ? इधर तो एक भी लड्डू नहीं रखा ?''

''गुरुजी ! षोडशोपचार की पूजा से भी मानसिक पूजा ज्यादा प्रभावशाली होती है, तो मन-ही-मन मैंने आपको स्नान कराया, वस्त्र पहनाये, गुलाब के फूलों की दो माला पहनायी, एक मोगरे की भी पहनायी, चंदन का तिलक किया, आरती की, फिर गुरुजी के लिए देशी घी लाया, लड्डू बनाये और अच्छी तरह से सवा मन लड्डू का मैंने भोग लगाया मन से।''

''इतने सारे !''

''गुरुजी ! जब मन का ही खिलाना है तो फिर डालडा का क्यों बनाना, देशी घी के बनाये थे।''

बड़ा खुश हो रहा था और उसकी खुशी को याद करके मैं भी तो खुश हो रहा हूँ।

दूसरी मैंने कहानी सुनी है कि दो मित्र साधु जा रहे थे। कहीं भिक्षा हुई नहीं। उन्होंने सोचा, 'चलो, मानसिक भोजन कर लेते हैं।' दोनों ने कल्पना की, कुछ बनाया, अपने-अपने इष्ट को भोग लगाया। फिर प्रसाद खाते-खाते पहला साधु बोल पड़ा : ''वाह-वाह ! क्या मजा आया ! कितना सुंदर है ! किशमिश भी मजे की है।'' और दूसरा बोलता है : ''हाय रे हाय... ! मर गये रे... मुँह जल गया।''

पहला साधु बोला : ''क्या बात है ? क्या खा रहे हो ?''

''कढ़ी में हरी मिर्च ज्यादा आ गयी है। हाय रे...''

''अरे हाय-हाय क्यों कर रहे हो ? जब मन का ही बनाना था तो ज्यादा मिर्चवाली कढ़ी क्यों बनाना ? हाय रे... इतना दुःखी हो रहा है ! मैंने तो इतना बढ़िया हलवा बनाया, मनपसंद भोजन बनाया, ठाकुरजी को भोग लगाया और खा रहा हूँ। तू काहे को दुःखी हो रहा है !''

''मेरे को तो ऐसा ही हो रहा है, मेरे भाग्य में तो ऐसा ही लिखा है।''

भाग्य में ऐसा नहीं लिखा, तेरा चिंतन गलत है। शिव-संकल्प नहीं है।

सुबह उठो तो सोचो, 'मेरे मन में मंगलकारी संकल्प हो, सुखकारी संकल्प हो, विधेयात्मक संकल्प हो।

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।'

मैंने देखा, एक ज्यादा अक्लवाला व्यक्ति है लेकिन उसको कोई काम सौंपता हूँ तो वह विफल हो जाता है। क्यों ? उसका सोचना जरा नकारात्मक है। वह बेचारा विफल-ही-विफल हो जाता है। अक्लवाला भी है, श्रद्धावाला भी है परंतु उसका बचपन से नकारात्मक चिंतन है। फिर दूसरे को वही काम सौंपता हूँ तो देखता हूँ कि हँसते-खेलते हो गया। तो जिसकी बचपन से नकारात्मक चिंतन की आदत हो गयी वह आध्यात्मिक जगत में जाता है, तब भी 'ऐं... ऊँ...'। कभी किसी वैद्य के पास तो कभी प्राकृतिक चिकित्सावालों के पास तो कभी होमियोपैथीवालों के पास वह बेचारा चक्कर काटता रहता है। नकारात्मक चिंतन आदमी को खाई में ले जाता है। आदत पुरानी है। वह पुरानी आदत आप जब तक खुद नहीं निकालना चाहोगे तब तक नहीं निकलेगी। तो आज संकल्प करो कि 'दुःखात्मक, नकारात्मक चिंतन जो भी आये उसको निकाल के फेंक दूँगा। हो-हो के क्या होगा ! चिंतावाले विचारों को महत्त्व नहीं दूँगा।'

प्रारब्ध पहले रच्यो, पीछे भयो शरीर।
तुलसी चिंता क्या करे, भज ले श्री रघुवीर॥

परिस्थितियाँ कैसी भी आयें, उनमें डूबो मत, उनका उपयोग करो। समझदार लोग संतों से, सत्संग से सीख लेते हैं और सुख-दुःख का सदुपयोग करके बहुतों के लिए सुख, ज्ञान व प्रकाश फैलाने में भागीदार होते हैं।

हमारा 'ओजस्वी पार्टी' से कोई लेना-देना नहीं है - पूज्य बापूजी

''यह जो 'ओजस्वी पार्टी' चल पड़ी है, इसमें भ्रमित नहीं होना कोई भी। इसकी कोई ठोस बुनियाद भी नहीं है और न होनेवाली है, न हम सहमति देते हैं। कोई सोचते हैं, बापू की पार्टी है लेकिन हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं है।''

देखिये विडियो इस लिंक पर : https://www.youtube.com/watch?v=xQJfHz0OVDo

ब्रह्मनिष्ठा श्रेष्ठ

राजा जनक के गुरु याज्ञवल्क्यजी थे। उनकी एक पत्नी का नाम मैत्रेयी तथा दूसरी का नाम था कात्यायनी। कात्यायनी संसारी रुचि में आगे थी और मैत्रेयी आत्मज्ञान में सर्वोपरि थी। दशरथ राजा भावना में आगे थे, कौशल्याजी आत्मज्ञान में आगे। कैकेयी और सुमित्रा भी ब्रह्मनिष्ठा में श्रेष्ठ थीं।

एकजुट हो षड्यंत्रकारियों का पर्दाफाश करें

– श्रीमती सुमन सिंहजी, राष्ट्रीय सचिव, शिवानंद तीर्थधर्म सेवा-समिति तथा वकील, पटना हाईकोर्ट

ये तमाम आरोप जो माननीय गुरुदेव के प्रति लगाये गये हैं, इनके पीछे बहुत बड़ा षड्यंत्र है। कानून में यह माना गया है कि अगर एफआईआर उसी दिन नहीं होती है तो ये चीज संदेहास्पद है। आप शहर में थे और आपने ५ दिन लगा दिये ? यानी आपके पीछे एक ऐसा तंत्र काम कर रहा है जिसने बापू को फँसाने के लिए योजना की सेटिंग की है। वे षड्यंत्र कर रहे हैं कि इतने बड़े संत को, जो भारतीय सनातन धर्म के प्रचारक हैं, परमात्मा के एक स्वरूप मनुजरूप में अवतरित हुए हैं, ऐसे बापूजी को बदनाम कैसे किया जाय ?

बापूजी, जिन्होंने आत्मस्वाभिमान के साथ कुकर्मियों, अपराधियों व गंदे लोग, जो समाज में किसी रूप में ऊँचे नेतृत्व पर बैठे हैं, उनके विरोध में समय-समय पर आवाज उठायी है, ऐसे संत की आवाज हमेशा के लिए कैसे दबा दी जाय ? इनको लोग बुरी दृष्टि से कैसे देखें और वे लोग जो गलत आचरणवाले व गलत प्रवृत्तियोंवाले हैं वे शासन-व्यवस्था को अपने हाथ में रखे रहें, उनकी गंदगियाँ छुपी रहें और वे व्यभिचार करते रहें और भारत के संत-समाज के लोगों पर आरोप-प्रत्यारोप करते रहें ताकि उनकी ओर किसीकी नजर न जाय। इन सब उद्देश्यों से प्रेरित होकर यह षड्यंत्र रचा गया है।

अतः हम सभी यह संकल्प लें कि 'हम निर्दोष पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय और एक षड्यंत्र के तहत उन्हें फँसाये जाने की वास्तविकता को लेकर शहर-शहर, गाँव-गाँव में जा के ऐसे षड्यंत्रकारियों की सच्चाई जनता तक अवश्य पहुँचायेंगे, उनका पर्दाफाश करेंगे।'

बिना सत्य के क्या ६ करोड़ अनुयायी सम्भव हैं ?

– डॉ. सुरेश गुंजाल, सनातन हिन्दू जनजागृति समिति

बिना आरोप सिद्ध हुए बापूजी को इतने समय तक जेल में भेजा गया ! हमें मालूम है कि परम पूज्य बापूजी जिन्होंने करोड़ों लोगों के मन पर साधना के संस्कार डाले हैं, भटके हुए लोगों को सत्य के मार्ग पर, साधना के मार्ग पर लाया है क्या वे इस प्रकार का घृणित कार्य कर सकते हैं ? कदापि नहीं ! तो फिर क्यों बार-बार समाचार पत्रों में या टीवी चैनलों पर कुप्रचार किया जा रहा है ?

मैं उन विपक्षी लोगों से पूछना चाहता हूँ, जिन्होंने कभी साधना नहीं की बल्कि जो साधना करते हैं उनको भी साधना के मार्ग से अलग करने की कोशिश कर रहे हो, क्या तुम २००-४०० लोगों की भी भीड़ जुटाकर अपने साथ लेकर इतने वर्षों तक चल सकते हो ? नहीं। परम पूज्य बापूजी ६ करोड़ साधकों को इतने वर्षों से साधना करा रहे हैं, क्या यह बगैर साधना के, बगैर संस्कार के, बगैर सत्य के सम्भव है ?

दूसरा, बापूजी ने क्या कार्य किये ? बच्चों में मूल्य-संवर्धन के लिए, नैतिक शिक्षा के लिए 'बाल संस्कार केन्द्र' चलवाये जा रहे हैं ताकि उनमें हमारी संस्कृति में जो बताये हुए साधना के, धर्म के मूल्य हैं उनका संवर्धन हो। तो ऐसे मूल्यों का संवर्धन करनेवाले से द्वेष क्यों ?

बापूजी ने धर्मांतरणवालों का विरोध करने के लिए हिन्दुओं को जागृत किया। यह भी संस्कृति-विरोधी टीवी चैनलों या हिन्दू विद्वेषी शासकों को मान्य नहीं था, इसलिए यह षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार चल रहा है।

अज्ञान-अंधकार से आत्मप्रकाश की ओर...

- पूज्य बापूजी

आत्मोद्धारक व जीवन-पथ प्रकाशक पर्व

जिस दिन भगवान सूर्यनारायण उत्तर दिशा की तरफ प्रयाण करते हैं, उस दिन उत्तरायण (मकर संक्रांति) का पर्व मनाया जाता है। इस दिन से अंधकारमयी रात्रि कम होती जाती है और प्रकाशमय दिवस बढ़ता जाता है। उत्तरायण का वाच्यार्थ है कि सूर्य उत्तर की तरफ, लक्ष्यार्थ है आकाश के देवता की कृपा से हृदय में भी अनासक्ति करनी है। नीचे के केन्द्रों में वासनाएँ, आकर्षण होता है व ऊपर के केन्द्रों में निष्कामता, प्रीति और आनंद होता है। संक्रांति रास्ता बदलने की सम्यक् सुव्यवस्था है। इस दिन आप सोच व कर्म की दिशा बदलें। जैसी सोच होगी वैसा विचार होगा, जैसा विचार होगा वैसा कर्म होगा। हाड़-मांस के शरीर को सुविधाएँ दे के विकार भोगकर सुखी होने की पाश्चात्य सोच है और हाड़-मांस के शरीर को संयत, जितेन्द्रिय रखकर सद्भाव से विकट परिस्थितियों में भी सामनेवाले का मंगल चाहते हुए उसका मंगलमय स्वभाव प्रकट करना यह भारतीय सोच है।

सम्यक् क्रांति... ऐसे तो हर महीने संक्रांति आती है लेकिन मकर संक्रांति साल में एक बार आती है। उसीका इंतजार किया था भीष्म पितामह ने। उन्होंने उत्तरायण काल शुरू होने के बाद ही देह त्यागी थी।

पुण्यपुंज व आरोग्यता अर्जन का दिन

जो संक्रांति के दिन स्नान नहीं करता वह ७ जन्मों तक निर्धन और रोगी रहता है और जो संक्रांति का स्नान कर लेता है वह तेजस्वी और पुण्यात्मा हो जाता है। संक्रांति के दिन उबटन लगायें, जिसमें काले तिल का उपयोग हो।

भगवान सूर्य को भी तिलमिश्रित जल से अर्घ्य दें। इस दिन तिल का दान पापनाश करता है, तिल का भोजन आरोग्य देता है, तिल का हवन पुण्य देता है। पानी में भी थोड़े तिल डाल के पियें तो स्वास्थ्यलाभ होता है। तिल का उबटन भी आरोग्यप्रद होता है। इस दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करने से १० हजार गौदान करने का फल होता है। जो भी पुण्यकर्म उत्तरायण के दिन करते हैं वे अक्षय पुण्यदायी होते हैं। तिल और गुड़ के व्यंजन, चावल और चने की दाल की खिचड़ी आदि ऋतु-परिवर्तनजन्य रोगों से रक्षा करती है। तिलमिश्रित जल से स्नान आदि से भी ऋतु-परिवर्तन के प्रभाव से जो भी रोग-शोक होते

हैं, उनसे आदमी भिड़ने में सफल होता है।

सूर्यदेव की विशेष प्रसन्नता हेतु मंत्र

ब्रह्मज्ञान सबसे पहले भगवान सूर्य को मिला था। उनके बाद राजा मनु को, यमराज को... ऐसी परम्परा चली। भास्कर आत्मज्ञानी हैं, पक्के ब्रह्मवेत्ता हैं। बड़े निष्कलंक व निष्काम हैं। कर्तव्यनिष्ठ होने में और निष्कामता में भगवान सूर्य की बराबरी कौन कर सकता है ! कुछ भी लेना नहीं, न किसीसे राग है न द्वेष है। अपनी सत्ता-समानता में प्रकाश बरसाते रहते हैं, देते रहते हैं।

'पद्म पुराण' में सूर्यदेवता का मूल मंत्र है : **ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः ।** अगर इस सूर्य मंत्र का 'आत्मप्रीति व आत्मानंद की प्राप्ति हो' - इस हेतु से भगवान भास्कर का प्रीतिपूर्वक चिंतन करते हुए जप करते हैं तो खूब प्रभु-प्यार बढ़ेगा, आनंद बढ़ेगा।

ओज-तेज-बल का स्रोत : सूर्यनमस्कार

सूर्यनमस्कार करने से ओज-तेज और बुद्धि की बढ़ोतरी होती है। **ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ अर्काय नमः।...** आदि मंत्रों से सूर्यनमस्कार करने से आदमी ओजस्वी-तेजस्वी व बलवान बनता है। इसमें प्राणायाम भी हो जाता है, कसरत भी हो जाती है।

सूर्य की उपासना करने से, अर्घ्य देने से, सूर्यस्नान व सूर्य-ध्यान आदि करने से कामनापूर्ति होती है। सूर्य का ध्यान भ्रूमध्य में करने से बुद्धि बढ़ती है और नाभि-केन्द्र में करने से मंदाग्नि दूर होती है, आरोग्य का विकास होता है।

आरोग्य व पुष्टि वर्धक : सूर्यस्नान

सूर्य की धूप में जो खाद्य पदार्थ, जैसे - घी, तेल आदि २-४ घंटे रखा रहे तो अधिक सुपाच्य हो जाता है। धूप में रखे हुए पानी से कभी-कभी स्नान कर सकते हैं। इससे सूखा रोग (Rickets) नहीं होता और रोगनाशिनी शक्ति बरकरार रहती है।

सूर्य की किरणों से रोग दूर करने की प्रशंसा 'अथर्ववेद' में भी आती है। कांड - १, सूक्त २२ के श्लोकों में सूर्य की किरणों का वर्णन आता है।

मैं १५-२० मिनट सूर्यस्नान करता हूँ। लेटे-लेटे सूर्यस्नान करना और भी हितकारी होता है लेकिन सूर्य की कोमल धूप हो, सूर्योदय से एक-डेढ़ घंटे के अंदर-अंदर सूर्यस्नान कर लें। इससे मांसपेशियाँ तंदुरुस्त होती हैं, स्नायुओं का दौर्बल्य दूर होता है। सूर्यस्नान का यह प्रसाद मुझे अनुभव होता है। मुझे स्नायुओं में दौर्बल्य नहीं है। स्नायु की दुर्बलता, शरीर में दुर्बलता, थकान व कमजोरी हो तो प्रतिदिन सूर्यस्नान करना चाहिए।

सूर्यस्नान से त्वचा के रोग भी दूर होते हैं, हड्डियाँ मजबूत होती हैं। रक्त में कैल्शियम, फॉस्फोरस व लोहे की मात्राएँ बढ़ती हैं, ग्रंथियों के स्रोतों में संतुलन होता है। सूर्यकिरणों से खून का दौरा तेज, नियमित व नियंत्रित चलता है। लाल रक्त कोशिकाएँ जाग्रत होती हैं, रक्त की वृद्धि होती है। गठिया, लकवा और आर्थराइटिस के रोग में भी लाभ होता है। रोगाणुओं का नाश होता है, मस्तिष्क के रोग, आलस्य, प्रमाद, अवसाद, ईर्ष्या-द्वेष आदि शांत होते हैं। मन स्थिर होने में भी सूर्य की किरणों का योगदान है। नियमित सूर्यस्नान से मन पर नियंत्रण, हार्मोन्स पर नियंत्रण और त्वचा व स्नायुओं में क्षमता, सहनशीलता की वृद्धि होती है।

नियमित सूर्यस्नान से दाँतों के रोग दूर होने लगते हैं। विटामिन 'डी' की कमी से होनेवाले सूखा रोग, संक्रामक रोग आदि भी सूर्यकिरणों से भगाये जा सकते हैं।

अतः आप भी खाद्य अन्नों को व स्नान के पानी को धूप में रखो तथा सूर्यस्नान का खूब लाभ लो।

दृढ़ संकल्पवान व साधना में उन्नत होने का दिन

उत्तरायण यह देवताओं (शेष पृष्ठ १९ पर)

गहरी साजिश के तहत सेवादारों को फँसाया गया

भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के षड्‌यंत्र के तहत पूज्य बापूजी पर झूठे, बेबुनियाद आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजा गया। साथ ही बापूजी के सेवादारों को भी इस घिनौनी साजिश के तहत झूठे आरोपों में फँसाया गया है। बापूजी के सत्संग से तो कितने ही हताश-निराश लोगों को जीवन जीने की नयी दिशा मिली है, उनका जीवन उन्नत हुआ है। बापूजी के बारे में ऐसी बातों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस कलियुग में जहाँ अपनी खुद की संतान भी बात मानने को तैयार नहीं होती, ऐसे समय में एक-दो नहीं करोड़ों लोग पूज्य बापूजी को आदर से सुनते-मानते हैं; इसके पीछे है पूज्य बापूजी का संयम, सदाचार, जप, तप, तितिक्षा और विश्वमानव के परोपकार की मंगल भावना। पूज्य बापूजी के बारे में चल रही अनर्गल बातों में यदि जरा-सी भी सच्चाई होती तो यह समझनेवाली बात है कि करोड़ों लोग पूज्य बापूजी से जुड़ते ही क्यों ! और इन करोड़ों लोगों में कितने ही देश-विदेश के उद्योगपति, राजनेता, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि ऊँचे-ऊँचे पदों में हैं। साथ ही इस केस में जिनको आरोपी बनाया गया है, वे भी सम्पन्न घरों के शिक्षित लोग हैं। वे क्यों सब कुछ छोड़कर आश्रम में आते !

छिंदवाड़ा गुरुकुल में डायरेक्टर पद पर कार्यरत **शरदचन्द्र भाई** हैदराबाद के निवासी थे। उन्होंने हैदराबाद से 'बायो मेडिकल इंजीनियरिंग' और यूएसए से 'एमएस' की डिग्री प्राप्त की हुई है। शरदचन्द्र भाई ब्रह्मचारी हैं। उन पर आरोप लगाया गया है कि 'वे बापूजी के पास लड़कियों को भेजते थे।' यह बिल्कुल वाहियात और झूठा आरोप है। यह तो सोचनेवाली बात है कि यदि आश्रम में ऐसी घटनाएँ होतीं तो इतना पढ़ा-लिखा, धन-धान्य से सम्पन्न व्यक्ति बापूजी के पास ही क्यों आता ! दूसरी बात यदि उसे ऐसे काम करने होते तो वह आश्रम क्यों आता ! आश्रम तो भगवद्‌भक्ति व साधना के लिए है, समाज सेवा के लिए है।

शिल्पी गुप्ता छिंदवाड़ा गुरुकुल में छात्रावास अध्यक्षा और संचालिका के रूप में सेवारत थीं। शिल्पी बहन के ऊपर आरोप लगाया है कि वे लड़कियों को बहला-फुसलाकर बापूजी के पास भेजती थीं। यह आरोप सरासर झूठा और बेबुनियाद है क्योंकि शिल्पी बहन पोस्ट ग्रेजुएट हैं तथा एक सम्पन्न परिवार से हैं। उन्हें घर में पैसों की कोई कमी नहीं है कि वे पैसे के लालच में ऐसा काम करें। शिल्पी बहन के पिताजी रायपुर में 'नगर तथा ग्राम निवेश' में 'संयुक्त संचालक' (Joint Director) के पद पर हैं। यदि ऐसा कुछ होता रहता तो वे बापूजी से जुड़ती ही क्यों ? शिल्पी बहन ने बताया था कि ''ईश्वर की कृपा से मेरे घर में कोई कमी नहीं है। बापूजी के द्वारा मुझे कभी कोई प्रलोभन नहीं दिया गया है और न फ्लैट दिया गया है और न ही ऐसा कोई ऑफर आया है कि मुझे कोई बड़ी संचालिका बना देंगे। मेरी बचपन से इच्छा थी कि सेवा करूँ और यहाँ पर आकर मुझे लगा कि यहाँ

(शेष पृष्ठ १९ पर)

'मीडिया का अतिरेक'

- डीडी न्यूज (दूरदर्शन)

२७ अक्टूबर को डीडी न्यूज पर 'मीडिया का अतिरेक' विषय पर चर्चासत्र हुआ, उसका सारांश :

डीडी न्यूज : खबरों पर अंतहीन और अर्थहीन बहस और न्यूज कवरेज का ताजा उदाहरण है आशारामजी बापू प्रकरण। बापू पर यौन उत्पीड़न के आरोप खबर जरूर है लेकिन उस पर जारी बहस में समाज और महिलाओं के हित में कितना विचार-विमर्श है, यह बात विचारणीय हो जाती है। समाचार पर विचार या समीक्षा का तर्कसंगत होना भी जरूरी है। क्यों खबर को ऐसे तौर पर पेश किया जा रहा है जो वैसी है भी नहीं ?

श्री प्रमोद जोशी, वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक : अखबारों में भी खबरें विकृत हुई हैं। आशारामजी की खबर में अतिरेक हुआ है इसमें कोई दो राय नहीं है। खबरों के व्यापारीकरण पर कुछ अंकुश की जरूरत है।

श्री विनीत कुमार, मीडिया विश्लेषक : आज आशारामजी से मीडिया को दिक्कत है। मीडिया को सारी दिक्कत सार्वजनिक प्रतिष्ठानों से इसलिए है क्योंकि कई प्रतिष्ठानों ने अलग से विज्ञापन के पैकेज न्यूज चैनल्स को नहीं दिये। मीडिया चैनल्स पत्रकारिता के नाम पर इन पर उँगलियाँ उठाते हैं तो वे उद्योग के लिए एक जमीन तैयार कर रहे हैं (पेड न्यूज को बढ़ावा दे रहे हैं)।

दर्शक १ : मीडिया पर भी नियंत्रण होना चाहिए। उसकी देश के प्रति जिम्मेदारी बनती है।

दर्शक २ : आजकल जो आशारामजी बापू को लेकर खबरें चला रहे हैं, उसके चक्कर में बाकी जो खबरें दर्शकों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं वे छूट जाती हैं।

श्री कुर्बान अली, पूर्व बीबीसी संवाददाता : मीडिया बौरा गया है। टीआरपी के लिए वह तमाम तरह की चीजें दिखा और कर रहा है। पैसा ही कमाना है तो और बहुत सारे धंधे हैं।

दर्शक ३ : खबर दिखायें, मुद्दे को दिखायें। मुझे बहुत दुःख होता है कि मुझे समाचार देखने के लिए नीचे पट्टियाँ देखनी पड़ती हैं। खबर नहीं दिखती, खोजनी पड़ती है कि कहाँ है।

दर्शक ४ : न्यूज एक तरीके के 'रियलिटी शोज' बन गये हैं।

श्री विनीत कुमार : खबरों में सिर्फ नैतिकता का सवाल नहीं है, कानून का भी सवाल है। गुमराह करनेवाले चैनलों पर केस किये जाने चाहिए।

दर्शक ५ : हम मीडिया का जो परिदृश्य देख रहे हैं, उसे देखकर कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा कि यह हमारे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है।

दर्शक ६ : चैनल्स जो खुद चाहते हैं वही दिखाते हैं और सिर्फ उनके अपने तरीके से ही। जनता क्या कह रही है, क्या सुन रही है, जनता का कितना नुकसान हो रहा है इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। महत्त्वपूर्ण खबरें तो कहीं हैं

ही नहीं !

दर्शक ७ : ये न्यूज चैनल्स देखने का मन ही नहीं करता। उनका महत्त्व ही खत्म हो गया है।

दर्शक ८ : आज का मीडिया केवल अपनी खबर को बेचना जानता है।

श्री अविनाश पांडे, सीओओ, एबीपी न्यूज : लोगों के विचार ठीक हैं कि इतना ज्यादा किसी भी न्यूज को घसीटा नहीं जाना चाहिए, पूरे दिन नहीं दिखाना चाहिए। यह मीडिया लाइव न्यूज का १३ साल पुराना बिजनेस (व्यापार) है। किसी भी न्यूज चैनल को चलने के लिए पैसा चाहिए होता है। आप कभी भी विज्ञापन के माध्यम से वह पैसा वसूल नहीं कर सकते।

(तो पैसा वसूलने के अन्य कौन-कौन से तरीके होंगे तथा एक ही विषय पर अंतहीन और अर्थहीन बहसों व न्यूज कवरेज का रहस्य क्या है यह सबको पता चल ही गया होगा।

- वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर)

मीडिया नैतिकता के मानकों का पालन करे : राष्ट्रपति

भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने मीडिया को सनसनी फैलाने तथा तथ्यों को विकृत करके समाज को गुमराह करने से बचने की सलाह देते हुए कहा था : ''मीडिया को वास्तविक तथ्यों की जगह गपशप और अटकलों को नहीं लाना चाहिए। राजनीतिक और व्यावसायिक हितों को विधिसंगत और स्वतंत्र राय के तौर पर प्रकट नहीं किया जाय। मीडिया अपने पाठकों और दर्शकों के माध्यम से राष्ट्र के प्रति जवाबदेह है।''

(पृष्ठ १७ गहरी साजिश... का शेष) मेरा निःस्वार्थ सेवा का संकल्प पूरा हो रहा है। मेरा और पूज्य बापूजी का संबंध एक पिता और पुत्री का ही है। मैं बापूजी को पिता ही मानती हूँ।''

किशोर देवड़ा बापूजी का अंगद सेवक है, ब्रह्मचारी है। उन्होंने अपने फार्म में बापूजी के लिए कुटिया बनवायी थी। बापूजी यदि ऐसा काम करते तो यह व्यक्ति कुटिया क्यों बनवाता ? बिल्कुल मनगढ़ंत कहानी बनाकर साजिशकर्ताओं द्वारा बापूजी पर घृणित आरोप लगवाये जा रहे हैं।

अब देश की जागरूक जनता इस षड्यंत्र को समझे और विचार करे कि बापूजी और उनके सेवादारों को आखिर क्यों सताया जा रहा है ? क्या उनका यही गुनाह है कि उन्होंने देश, संस्कृति व समाज को नोचने व तोड़ने वाली ताकतों से देशवासियों को बचाने का प्रयत्न किया ?

(पृष्ठ १६ मकर संक्रति... का शेष) का ब्राह्ममुहूर्त है तथा लौकिक व अध्यात्म विद्याओं की सिद्धि का काल है। तो मकर संक्रांति के पूर्व की रात्रि में सोते समय भावना करना कि 'पंचभौतिक शरीर पंचभूतों में, मन, बुद्धि व अहंकार प्रकृति में लीन करके मैं परमात्मा में शांत हो रहा हूँ। और जैसे उत्तरायण के पर्व के दिन भगवान सूर्य दक्षिण से मुख मोड़कर उत्तर की तरफ जायेंगे, ऐसे ही हम नीचे के केन्द्रों से मुख मोड़कर ध्यान-भजन और समता के सूर्य की तरफ बढ़ेंगे। ॐ शांति... ॐ आनंद...'

रात को **'ॐ सूर्याय नमः।'** इस मंत्र का चिंतन करके सोओगे तो सुबह उठते-उठते सूर्यनारायण का भूमध्य में ध्यान भी सहज में कर पाओगे। उससे बुद्धि का विकास होगा।

आदर्श शिक्षा के प्रेरणास्रोत

पं. मदनमोहन मालवीय जयंती
२५ दिसम्बर

बचपन में माँ के द्वारा प्रभुप्रीति व देशभक्ति के अंकुरित किये संस्कारों ने पं. मदनमोहन मालवीयजी को आज करोड़ों लोगों का आदर्श व प्रेरणास्रोत बना दिया है । वे बड़े ही चिंतनशील व्यक्ति थे । जब वे विद्याध्ययन करते थे, तभी से उनके मन में एक लहर उठती थी कि 'हमारे देश के विद्यार्थियों को उच्चतर पढ़ाई के लिए विदेश क्यों जाना पड़ता है ? विदेश जाने से विद्यार्थियों का नैतिक पतन होता है । अतः स्वदेश में ही क्यों न पुराने आश्रमों के आधार पर नये आश्रम खोले जायें ।' मालवीयजी प्रयाग से काशी तक गंगाजी के किनारे-किनारे ऐसे ही आश्रम-परम्परावाले विद्यालय खोलना चाहते थे । उन्होंने बहुत-से लोगों से ऐसी बातें कहीं परंतु किसीने उनकी बात को ध्यान से सुना नहीं तो किसीने सुन के हँस दिया, कोई कहता : 'मालवीयजी ! तुम्हारा दिमाग फिर गया है । कहीं ऐसा हो सकता है !'

मालवीयजी बड़े ही सकारात्मक सोच के धनी थे । वे भारत को एक नवीन व विकासशील रूप देना चाहते थे । वे भारतीय प्राचीन सभ्यता के विश्वविख्यात 'तक्षशिला' और 'विक्रमशिला' जैसे विश्वविद्यालयों को भारत में पुनः स्थापित करने का स्वप्न देखा करते थे और उन्होंने इस सपने को पूरा करके दिखाया । उन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' के रूप में भारत को विद्या व सभ्यता के जगत में एक अनमोल धरोहर प्रदान की ।

सच्चरित्रता व सादगी के पुजारी मालवीयजी विद्यालयों व महाविद्यालयों में दी जानेवाली शिक्षा को ही सब कुछ नहीं समझते थे । वे कहते थे : ''इस विश्वविद्यालय में केवल विद्या पढ़ने के लिए ही मत आओ वरन् चरित्र बनाने के लिए भी आओ । **ज्ञान और चरित्र दोनों जब मिल जाते हैं तो संसार में प्रेम का सूर्य चमकने लगता है जो देश और समाज का गौरव होता है ।''**

मालवीयजी बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष जोर देते थे । विश्वविद्यालय में व्यायाम करने को प्रथम कर्तव्य बताते हुए मालवीयजी कहते थे : ''पहले स्वास्थ्य है फिर विद्या । स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन होता है तो जीवन का असली लाभ मिलता है । अतः नित्य प्रातः-सायं व्यायाम किया करो ।''

काशी विश्वविद्यालय के आदर्श उपकुलपति श्री मालवीयजी के यहाँ निर्धन छात्र भी रहते थे । महामना उन्हें पैसे, वस्त्र एवं पुस्तकें देते साथ ही ठंडी के मौसम में कम्बल बाँटते थे । उनका प्रतिदिन का नियम था कि 'किसी-न-किसी विद्यार्थी को उसकी समस्याओं के बारे में पूछना और उन्हें दूर करने का उपाय करना ।'

एक दिन उन्होंने एक लड़के से पूछा : ''क्या तुम दूध पीते हो ?''

लड़का उदास होकर बोला : ''हम बहुत गरीब हैं ।''

मालवीयजी ने उस लड़के के लिए दूध का प्रबंध

करा दिया। ऐसे थे विशाल हृदय और उदार मन वाले मालवीयजी !

मालवीयजी विद्यार्थियों को सुसंस्कार देने हेतु धार्मिक उत्सवों, एकादशी कथा और गीता-प्रवचन में उपस्थित रहने के लिए विशेष जोर देते थे। वे कहते थे कि ''तुम आर्यों की संतान हो। आर्यों की तरह विद्वान व बलवान बनो और भारत का नाम फैलाओ। जब विद्वान बनोगे तो समय का मूल्य जान जाओगे। जब बलवान बनोगे तो अपनी रक्षा आप स्वयं कर लोगे। माता-पिता और गुरु का आदर कैसे किया जाता है यह भी सीखो।''

विद्यार्थियों की सर्वोन्नति ही मालवीयजी का मुख्य लक्ष्य था। इसके चलते आवश्यकता पड़ने पर वे अपने विश्वविद्यालय के नियमों की भी उपेक्षा कर देते थे। एक बार जयकुमार नाम का एक कुशाग्र बुद्धि का विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय में आचार्य पदवी के पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष में पढ़ रहा था। अचानक उसके पिता का निधन हो गया और वह अंत्येष्टि हेतु घर गया। आने में देर होने के कारण उसकी उपस्थिति पूरी न हो सकी, जिससे वह परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। तब शिक्षक पंडित अम्बिका प्रसाद ने उस छात्र से कहा : ''एक निवेदन-पत्र लिखकर मालवीयजी के पास जाओ और उनके पास यह श्लोक पढ़ देना।'' जिसका अर्थ था - 'द्रौपदी की रक्षा करने में जो तुम्हें जल्दी थी, जो जल्दी तुम्हें गजेन्द्रमोक्ष में थी, हे दयानाथ ! वह जल्दी हमारे विषय में कहाँ चली गयी ?' उस विद्यार्थी ने वैसा ही किया और वह श्लोक पढ़ते-पढ़ते मालवीयजी के आगे भावविभोर हो रो पड़ा। श्लोक सुनते ही मालवीयजी की भी आँखों से अश्रुधाराएँ बह चलीं और उन्होंने तुरंत प्रार्थना-पत्र पर लिख दिया 'इसका नाम लिख दिया जाय।' कुछ दिनों के बाद वह छात्र परीक्षा में बैठा और पूरे विश्वविद्यालय में प्रथम आया।

सर्वभूतहितेरतः की भावना से ओतप्रोत मालवीयजी विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श शिक्षक व उनके प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने आधुनिक विद्या का स्वास्थ्य, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक शिक्षा से समन्वय करके भारत को शिक्षा जगत में एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया था।

पूज्य बापूजी सनातन धर्म के रक्षक हैं

- श्री रुद्रपुरीजी महाराज

कहते हैं : **विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।** 'नाश का समय आता है तो बुद्धि विपरीत हो जाती है।' जैसे अभी इन षड्यंत्रकारियों की हो गयी है। वोट के, सत्ता के कारण यह चक्कर चल रहा है।

बापूजी धर्म-परिवर्तन नहीं होने दे रहे हैं। वे गौ-रक्षा, हिन्दुत्व की रक्षा के लिए सचेत करते हैं। वे सरेआम बोलते हैं कि 'धर्म मत बदलो।' इसलिए बापूजी को निशाना बनाया जा रहा है। हमारे धर्म के ऊपर बहुत ही कुठाराघात हो रहा है, चारों तरफ से हमारे खिलाफ साजिश चल रही है तो हमें एकजुट होना पड़ेगा। जब हम 'सनातन' बोलते हैं तो हमें एक होना ही पड़ेगा तभी समस्या का हल होगा। हमारी संस्कृति महान है, महान रहेगी और तो ये जितने धर्म हैं न, वे पत्ते-टहनियाँ, फल-फूल हैं, जड़ तो सनातन धर्म है। बापूजी सनातन धर्म के रक्षक हैं और ये लोग भक्षक हैं। हमें अपनी संस्कृति को बचाना है तो एकजुट होना ही पड़ेगा।

और रही बात मीडिया की, तो कौन-सी सच्चाई है अधिकांश मीडिया के अंदर ? बापूजी के सभी समर्थक श्रद्धा और शांति बनाये रखें, भगवान पर विश्वास करें। अधिक-से-अधिक लोगों तक पत्रिकाओं, सीडी आदि के माध्यम से सच्चाई पहुँचायें।

आशारामजी बापू के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करनेवालों की मुसीबत बढ़ी

एन.बी.एस.ए. ने 'इंडिया टीवी' को लगायी कड़ी फटकार

'नेशनल ब्रॉडकास्टिंग स्टैंडर्ड्स ऑथोरिटी' (एन.बी.एस.ए.) ने 'इंडिया टीवी' न्यूज चैनल को पूज्य बापूजी के लिए अपमानजनक, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करने के लिए चेतावनी जारी की है। बापूजी के कुछ भक्तों ने इंडिया टीवी के दुष्प्रयासों के खिलाफ एन.बी.एस.ए. में फरियाद की थी, जिस पर कार्यवाही करते हुए एन.बी.एस.ए. ने यह नोटिस जारी की है।

उल्लेखनीय है कि इंडिया टीवी पर प्रसारित कार्यक्रम 'बदनाम बापू' में पूज्य बापूजी के लिए अपमानजनक और अभद्र शब्दों का प्रयोग किया गया था। एन.बी.एस.ए. ने आगे इंडिया टीवी को चेतावनी देते हुए कहा कि भविष्य में अगर असावधानी बरती गयी तो उनके चैनल पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

यह एक सोची-समझी गहरी साजिश है

- डॉ. माला इंगले, एम.बी.बी.एस. एम.डी.(गाइनिकोलॉजिस्ट), नागपुर

मैं एक गाइनिक सर्जन हूँ। मैंने १९९७ में पूज्य बापूजी से दीक्षा ली थी। बापूजी के सत्संग में आने से हमारे जीवन में अद्‌भुत परिवर्तन हुए। मैं व मेरी दो बेटियाँ - हम कई बार साधना-अनुष्ठान के लिए अहमदाबाद आश्रम जाते रहते हैं लेकिन हमारे साथ कभी भी कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। मगर अफसोस की बात है कि आज हम करोड़ों साधकों की बात को ठुकराकर षड्यंत्रकारियों द्वारा मोहरा बनायी गयी केवल एक-दो लड़कियों के कहने से निर्दोष पूज्य बापूजी पर बेहद बेबुनियाद, घिनौने और शर्मनाक आरोप लगाये जा रहे हैं।

एक स्त्री-विशेषज्ञ होने के कारण मेरे पास भी बलात्कार व यौन-शोषण के कई केस आते हैं। आमतौर पर ऐसे केसों में लड़की व उसके माँ-बाप तो डरे-डरे से, गहरी पीड़ा व सदमे से भरे होते हैं मगर ऐसा केस मैंने आज तक कभी देखा-सुना हीं है कि लड़की के साथ ऐसी घटना घटे और लड़की सबके साथ हँसे-बोले, फिर ५ दिन बाद शिकायत करे। यह बात सीधा सिद्ध करती है कि यह बापूजी के खिलाफ एक सोची-समझी गहरी साजिश है, सूरज-से दैदीप्यमान पूज्य बापूजी की छवि को कलंकित करने की कुचेष्टा है।

बापूजी सभीका भला ही सोचते हैं

- संत बाबा हरपाल सिंहजी प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा

पूज्य बापूजी सभीका हर तरह से भला ही सोचते हैं, किसीका बुरा नहीं सोचते। परंतु ऐसे संत की जो निंदा करते हैं :

संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार।

साध का निंदकु कैसे तरै। सरपर जानहु नरक ही परै।

हमारे साथ हमारे दिलों में बापूजी के लिए प्यार है। यह बात सभी जानते हैं कि षड्यंत्र हो रहे हैं और ऐसे समय में जो भी कर्तव्य हो वह हम पूरा करने को तैयार हैं।

राष्ट्र-विखंडन का कूटनीतिक षड्यंत्र

– यूरी इलेक्सान्द्रोविच बेज्मेनोव रूस, केजीबी के पूर्व प्रचार एजेंट व विशेषज्ञ

किसी देश की सैद्धांतिक विचारधारा का नष्टीकरण यह एक खुल्लम-खुल्ला तरीका है जिसके जरिये किसी भी देश, जाति, धर्म के सिद्धांत, विचारधारा और व्यवस्था का नाश करके दूसरे देश की विचारधारा और व्यवस्था स्थापित की जाती है। सोवियत रूस की जासूस एजेंसी केजीबी का ज्यादातर काम जासूसी का नहीं है बल्कि दूसरे देशों की सत्ता, व्यवस्था को नष्ट या परिवर्तित करने का है। केवल १५ प्रतिशत समय और पैसा जासूसी में लगता है, बाकी ८५ प्रतिशत एक कूटनीतिक चाल से धीरे व चुपके से, सालों-साल की मेहनत द्वारा उठा-पटक करके लोगों का ब्रेनवॉश कर उनका मन और विचारधारा बदल के देश की व्यवस्था को नष्ट या मूलभूत रूप से परिवर्तित करने के लिए लगाया जाता है। जैसे हम हर अमेरिकन का दिमाग बदलकर ऐसा कर देते हैं कि वे सच्चाई को समझ-बूझ ही न पायें। चाहे आप उनके सामने सारी सच्चाई खोलकर रख दें फिर भी वे अपनी, अपने परिवार, जाति, धर्म तथा अपने देश की रक्षा न कर पायें। यह एक बहुत बड़ा ब्रेनवॉशिंग या पागल या स्थायी मूर्ख बनाने का सीधा तरीका है, जिससे किसी भी देश की पूरी जनसंख्या की विचारधारा और व्यवहार को बदला जाता है। यह बहुत चतुराई से धीरे-धीरे करना होता है ताकि देश की जनता को इसका बिल्कुल भी आभास न हो। इस तरीके के चार चरण हैं :

(१) Demoralisation or corrupting morals (भ्रष्टीकरण या नैतिक पतन)

(२) Destabilisation (अस्थिरीकरण यानी अर्थ व्यवस्था, विदेश संबंध और देशरक्षा विभाग को गिराना)

(३) Crisis (संकट का समय)

(४) Normalisation (साम्यवादी सत्ता, अर्थ व्यवस्था और ढाँचा जबरदस्ती से थोप देना)

जैसे मोहनजोदड़ो, बेबीलोन, मिश्र आदि की प्राचीन सभ्यताएँ केवल इसलिए ही तहस-नहस हो गयीं क्योंकि उनकी शिक्षा, धर्म, संस्कृति और उनका सामाजिक ढाँचा गिरा दिया गया था। कुछ वर्ष पहले जापानी लोग अपनी संस्कृति, विचारधारा, सभ्यता, परम्परा व मूल्यों आदि को सही सलामत व अखंड रखने के लिए बाहरी किसी भी देश की कोई भी चीज स्वीकार नहीं करते थे।

पहला चरण Demoralisation या स्वाभिमान और मनोबल को नष्ट करने का होता है। इसमें जनता को निरुत्साहित किया जाता है। यह बुद्धि भ्रष्ट करने की बहुत ही धीमी प्रक्रिया है। इसमें १५ से २० साल लगते हैं क्योंकि एक पूरी पीढ़ी का मनोबल और स्वाभिमान नष्ट करना पड़ता है। युवा पीढ़ी का १५-२० वर्ष की अवधि में

भ्रष्टीकरण या नैतिक पतन करके देश की व्यवस्था को तहस-नहस किया जाता है। पूरी एक पीढ़ी के विद्यार्थियों को यह सिखाना पड़ता है कि तुम्हारे देश की व्यवस्था सड़ी-गली है और विदेशियों की बहुत अच्छी है। इससे आप अपने दुश्मन के नवयुवकों की विचारधारा पर कब्जा कर लेते हैं। इसके लिए प्रोफेसर आदि बुद्धिजीवी लोग उस युवा पीढ़ी का अस्थिरीकरण करने और उनके दिमागों को पलटने के लिए विदेशी षड्यंत्रकारियों के हथियार व मोहरा बनते हैं।

जैसे कि मार्क्सिस्ट, लेनिनिस्ट या कम्युनिस्ट विचारधारा को तीन पीढ़ियों के दिमाग में हम भर रहे हैं, जिससे वे हमारे अनुसार ही सोचने लगें। इसको वे समझ नहीं पाते और अपने देश की मूलभूत विचारधारा और देशभक्ति को छोड़कर हमारे चंगुल में आ के फँस जाते हैं। हमारा बहुत-सा जासूसी का काम पहले उन लोगों की जानकारी इकट्ठा करने में लगता है, जिनका इस्तेमाल हम उस देश के बच्चों की विचारधारा नष्ट कर हमारी विचारधारा थोपने के लिए कर सकते हैं। इसमें प्रकाशक, सम्पादक, पत्रकार, एक्टर, अध्यापक, राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर, संसद सदस्य, व्यापारिक संगठनों के प्रवक्ता इत्यादि लोगों का हम इस्तेमाल करते हैं। इनको हम दो भागों में बाँटते हैं, एक तो वे जो सोवियत विचारधारा या कम्युनिस्ट विचारधारा को बढ़ावा देंगे, उन्हें हम महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठाते हैं ताकि वे मीडिया और लोकसंचार के जरिये लोगों को हमारी विचारधारा में बहकायें। और दूसरे वे जो हमारे खिलाफ हैं उन्हें हम नष्ट करते हैं, उनके चरित्र पर लांछन लगाकर, अफवाहें फैला के अथवा उनकी हत्या करवाकर या दुर्घटना में उनकी मौत दिखाते हैं।

इस कूटनीति के अंतर्गत युवाओं का नैतिक पतन करते हैं, जिसमें विद्यार्थियों को गलत तथ्य और जानकारी सिखाकर गुमराह किया जाता है। ऐसे में बुद्धिजीवी तबका जैसे प्रोफेसर इत्यादि देश की संस्कृति को नष्ट करने में कठपुतली बन जाते हैं। इनकी गतिविधियाँ धर्म, देश की सरकारी व आर्थिक पद्धति का विनाश करने का हिस्सा हैं और उनकी विनाशकारी गतिविधियाँ विषैली मीठी गोलियों की भाँति होती हैं। उनके गहरे षड्यंत्रों का देश के लोगों को एहसास भी नहीं हो पाता। ऐसे में देश के छुपे हुए शत्रु होते हैं परंतु शत्रु जैसे नजर ही नहीं आते इसलिए वे धीरे-धीरे देश को अंदर से खोखला कर देते हैं । ऐसा देश फिर रेत पर बने महल की तरह किसी भी समय गिरकर उसकी छत के नीचे सोनेवालों की कब्र बन जाता है।

इसके लिए बेशुमार व अनर्गल विदेशी कचरा-साहित्य का आयात किया जाता है और युवा पीढ़ी को इसका निशाना बनाया जाता है क्योंकि वर्षों से कुपोषित व घटिया भोजन (फास्टफूड आदि) को खा-खाकर वे उनका विरोध करने की मानसिक व शारीरिक शक्ति खो चुके होते हैं। विदेशी कम्पनियाँ केवल उन्हीं टीवी चैनलों को अपने विज्ञापन देती हैं, जो उनकी रद्दी व बेकार वस्तुओं का प्रचार-प्रसार करते हैं।

अभी भारत देश में स्वाभिमान और मनोबल को नष्ट करने का काम पूरा हो चुका है। यदि आप अभी भी इसका इलाज करना चाहते हैं तो आपको एक नयी पीढ़ी को स्वाभिमानी, देशप्रेमी और उत्साही बनाने में १५ से २० साल लग जायेंगे। तभी नयी पीढ़ी इस सच्चाई को ठीक से समझ पायेगी और इस नैतिक और मानसिक आक्रमण से अपनी, अपने परिवार, जाति व देश की रक्षा कर पायेगी।

(रूस के बहुत से बुद्धिजीवी लोग कम्युनिस्ट नीति से तंग आ के जान का जोखिम उठाकर विदेश चले गये। उनमें से एक हैं यूरी इलेक्सान्द्रोविच बेज्मेनोव। वे अभी अमेरिका में रहते हैं।

आज भारत के हितचिंतकों व देशप्रेमी जनता को जागने तथा सावधान होने की जरूरत है। यह षड्यंत्र हमारे देश में बहुत तेजी से चल रहा है। भारत के युवाओं की विचारधारा को दैवी, सबल व भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत बनाने का काम जो संत कर रहे हैं, आज उन्हींके चरित्र पर लांछन लगाकर विदेशी कूटनीतिक षड्यंत्र द्वारा भारत की युवा पीढ़ी को खोखला व गुलाम बनाया जा रहा है। अतः हम सभीको सजग व एकजुट हो के इस षड्यंत्र को विफल

चाहिए।

आज भारत में संस्कृति के आधारस्तम्भ निर्दोष संतों पर अत्याचार किये जा रहे हैं, फिर भी हम सब जाग नहीं रहे हैं। गुमराह करनेवाले झूठी खबरें दिखाये जा रहे हैं, छापे जा रहे हैं। उपरोक्त व्यापक योजना के तहत जिन हिन्दुओं का ब्रेनवॉश हो चुका है, जिनका डिमोरलाइजेशन हो चुका है उन्हींको अधिकांश मीडियावालों द्वारा समाज के सामने ला-लाकर पेश किया जा रहा है और दूसरे लोगों को भी निशाना बनाने की कोशिश की जा रही है।

इसलिए अनेक 'बाल संस्कार केन्द्रों' आदि के माध्यम से हमें नयी पीढ़ी को अपनी संस्कृति के मूल्यों से अवगत कराना पड़ेगा। अन्यथा षड्यंत्र का दूसरा चरण destabilization भी शुरू हो जायेगा और कालांतर में यह संस्कृति के लिए अत्यधिक घातक सिद्ध होगा।

यूरी इलेक्सान्द्रोविच बेज्मेनोव के वक्तव्य के विडियो को आप इस लिंक पर देख सकते हैं :

https://www.youtube.comwatch?v= HpwPqK6RUGE

इसका प्रचार-प्रसार करके देशवासियों को इस देश को विखंडित करनेवाली विदेशी ताकतों की कूटनीति से अवगत कराना भी राष्ट्रसेवा का उत्तम कार्य है। **– वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर)**

करोड़ों लोगों की बात अनदेखी नहीं करनी चाहिए

– भरतसिंह, पूर्व विधायक, दिल्ली

लाखों की बात नहीं, करोड़ों लोग बापूजी के भक्त हैं इसमें कोई दो राय नहीं है। मैं मीडिया से एक बात कहना चाहूँगा कि 'यदि आप बापूजी के विषय में दिखा रहे हो तो उसका जो सच है या जो बात उनके करोड़ों लोग कह रहे हैं वह भी तुम्हें दिखानी चाहिए। उन्हें अनदेखा नहीं करना चाहिए।'

यह सब साजिश के तहत ही हो रहा है और बिल्कुल गलत है। अरे ! शर्म की बात है। इस तरीके के घिनौने आरोप लगाकर एक बाप-बेटी के रिश्ते में और पति-पत्नी के बारे में आप क्या मान्यताएँ पैदा कर रहे हैं ! यह जीवन में कभी नहीं हो सकता।

मुस्लिम समाज भी बापूजी का बहुत आदर करता है

– मौलवी हसन साहब, नई दिल्ली

बापूजी जैसे नेक आदमी हमने नहीं देखे। उनसे बढ़िया आदमी कोई भी नहीं देखा। वे सबकी भलाई करते हैं। उनको जबरदस्ती फँसाया गया है। उनको घेर के कई साल से उनके पीछे पड़े हुए हैं कि उनको कैसे फँसाया जाय ? इसी हिसाब से उनको फँसाया गया है।

हिन्दू समाज, मुस्लिम समाज – हर समाज बापूजी का बहुत आदर करता है, बहुत इज्जत करता है। न्यायालय उनको जमानत दे। एक अच्छे आदमी को कैसे फँसाया गया है उसकी छानबीन करे और जिसने फँसाया है उसको पकड़े। हकीकत क्या है, उसको जनता के आगे लाये।
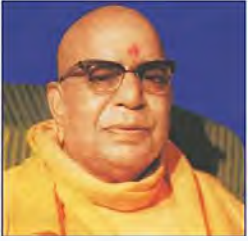
यह सब सपना है

- स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

बंगाल में एक बहुत बड़ा मुकदमा चला था। उसमें एक गवाह पेश किया गया था। वह गवाही दे रहा था : ''हाँ साहब ! उन्होंने हमारे सामने ऐसा किया। बम बनाने की सामग्री ले आये हमारे सामने। हमने उनको बम ले जाते देखा, हम साथ ही थे।''

फिर उसने कहा : ''हमने इनको बम फेंकते देखा।'' न्यायाधीश एकदम आश्चर्यचकित ! बिल्कुल चश्मदीद गवाह ! आँखों-देखी घटना का वर्णन कर रहा है। गवाह ने आगे कहा : ''जज साहब ! इसने बड़े जोर से बम फेंका और धड़ाका हुआ तो हमारी नींद टूट गयी।''

जज : ''तो क्या यह सपना था ?''

गवाह : ''हाँ साहब ! यह सपना था।''

अब बताओ ! वर्णन करने में क्या फर्क हुआ ? सचमुच बंगाल में ऐसा मुकदमा चला था। अंग्रजों के जमाने में किसी क्रांतिकारी को पकड़ के उन लोगों ने मुकदमा चलाया था। उन्होंने ५०० रुपये में झूठा गवाह तय किया था। सामनेवालों को जब पता चला तो उन्होंने एक हजार रुपये का संकेत किया। इस पर उसने गवाही चौपट कर दी।

घटना चाहे सिनेमा की हो या कल्पना की हो, उसका जब वर्णन किया जाता है, तब ऐसे ही किया जाता है, जैसे सच हो। वह तो अंत में देखना पड़ता है कि यहाँ वर्णन करनेवाले का अभिप्राय क्या है ?

इसी प्रकार जो सृष्टि का वर्णन है, उसमें यथार्थ वस्तु से सृष्टि हुई हो तो और मायिक वस्तु से सृष्टि हुई हो तो, जब इसके क्रम का वर्णन करेंगे, तब बिल्कुल एक ही ढंग से किया जायेगा। अंत में कह दिया कि 'यह सब सपना है।' तो सब वर्णन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा कि नहीं हो जायेगा ?

बोले : तो वेद-शास्त्र-पुराण में जो सृष्टि का वर्णन है, उसमें वेद वर्णन करते-करते अंत में कह देते हैं 'ना-ना' तो कुछ है ही नहीं।

नेह नानेति चाम्नायात। (माण्डूक्यकारिका : २४)

और वे कह देते हैं कि

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते। (वृहद. : २.५.१९)

माया के रूप हैं, तो यह गंधर्वनगर है, यह तो स्वप्नवत् है, यह तो मानसी रचना है। ठसाठस-ठोस अधिष्ठान में यह तो कल्पना है। इस तरह का वर्णन मिलता है कि वर्णन पढ़ते-पढ़ते, कहानी पढ़ते-पढ़ते तन्मय हो जाते हैं, कभी-कभी नाटक देखते-देखते मनुष्य तन्मय हो जाते हैं लेकिन वास्तव में देखो तो ठोस कुछ भी नहीं।

इच्छा हुई तो सोचो कि 'इच्छा के अनुसार कर्म करें या बुद्धि से सोचके कर्म करें ?' इच्छा हुई, फिर मन ने उसको सहमति दी और इच्छा के अनुरूप मन करना चाहता है तो धीरे-धीरे बुद्धि दब जायेगी। बुद्धि का राग-द्वेष का भाग उभरता जायेगा, समता मिटती जायेगी। अगर शास्त्र, गुरु और धर्म का विचार करके बुद्धि को बलवान बनायेंगे और समता बढ़ानेवाला, मुक्तिदायी जो काम है वह करेंगे तो बुद्धि और समता बढ़ेगी लेकिन मन का चाहा हुआ काम करेंगे तो बुद्धि और समता का नाश होता जायेगा। कुत्ते, गधे, घोड़े, बिल्ले, पेट से रेंगनेवाले तुच्छ प्राणी और मनुष्य में क्या फर्क है ?

कानून के रखवाले ही कानून का मजाक क्यों बना रहे हैं ?
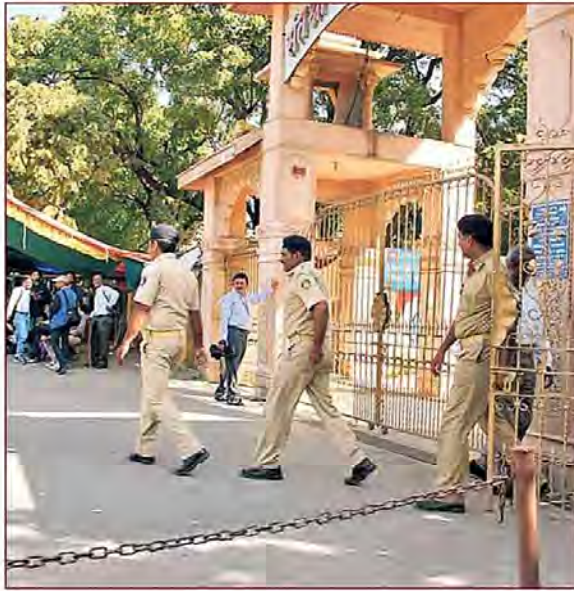
अहमदाबाद, २१ नवम्बर । कानून की रखवाली कही जानेवाली पुलिस ने बिना कोई सर्च वॉरंट दिखाये ही अहमदाबाद आश्रम में छानबीन करके खुद कानून का उल्लंघन किया है । सुबह ६:१५ बजे सूरत पुलिस की ८-१० गाड़ियाँ आश्रम में आयीं और आते ही पुलिस ने टेलीफोन कार्यालय से सबको बाहर निकाल दिया तथा शाम ५ बजे तक पुलिस का पहरा उस कार्यालय पर रहा । पूरे आश्रम-परिसर में पुलिसवाले तैनात कर दिये गये । बाहर से आनेवाले श्रद्धालुओं को आश्रम में प्रवेश करने तथा आश्रम के साधकों को बाहर जाने से रोक दिया गया । पुलिस अपने साथ असामाजिक तथा अपराधी प्रवृत्ति के अमृत प्रजापति व महेन्द्र चावला को भी लेकर आयी थी, जिन्होंने चेहरे पर कपड़ा बाँधा हुआ था ।

डीसीपी शोभा भूतड़ा के साथ पुलिस की एक टीम अमृत प्रजापति व महेन्द्र चावला को लेकर आश्रम के सभी कमरों की तलाशी लेने लगी । जिन कमरों में ताले लगे थे और चाबी नहीं थी या लाने में देर हुई तो ग्राइंडर (कटर) से उन दरवाजों के तालों को तोड़ा गया । कमरों में जाँच के दौरान पुलिस ने आश्रम के सेवकों को नहीं जाने दिया । वहाँ से क्या सामान लिया, कौन-से कागजात उठाये यह किसीको नहीं बताया गया । ऐसे में पुलिस तो कुछ भी सामान रखकर सबूत बना सकती है ! एफएसएल की टीम दिनभर एकाउंट रूम में बैठी रही, कौन-से पेपर लिये, क्या डाटा लिया, इसकी कोई जानकारी नहीं दी गयी ।

धार्मिक आस्था के स्थान जैसे मोक्ष कुटीर, शांति कुटिया तथा व्यास भवन आदि जहाँ पर भक्त लोग बड़े श्रद्धाभाव से आकर ध्यान-भजन करते हैं, माथा टेकते हैं वहाँ पुलिस अमर्याद ढंग से जूते पहन के घुसी, जिससे भक्तों की भावनाओं को गहरी चोट पहुँची । सत्संग-मंडप में सुबह की संध्या कर रहे लोगों को पूछताछ के नाम पर वहीं पर बिठा के रखा । सुबह ५ बजे से संध्या में बैठे लोगों को दोपहर तक उठने नहीं दिया गया । साधकों को पेशाब के लिए भी नहीं जाने दिया ।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बी. एम. गुप्ता को जब आश्रम बुलाया गया तो वे तुरंत आश्रम पहुँचे और वहाँ पुलिस की कार्यवाही के बारे में साधकों ने उनसे बात की । पुलिस की इस गैर-कानूनी कार्यवाही पर बहुत नाराजगी जताते हुए उन्होंने मीडिया में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की : ''नियम कहता है कि रेड भी डालनी हो तो पहले मजिस्ट्रेट या किसी ऑफिसर का सर्च वॉरंट होना चाहिए पर ये लोग सर्च वॉरंट लिये बगैर आ गये । पुलिस जो भी यहाँ से माल बरामद करेगी उसकी सूची बनानी पड़ेगी, उसकी कॉपी आश्रम को देनी पड़ेगी और बरामद किये गये माल की सूची न्यायालय में पेश करनी पड़ती है और वहाँ से कानून का ऑर्डर लेकर फिर ये उन वस्तुओं को ले जा सकते हैं । बाकी यह सब जो चल रहा है, वह हकीकत में गैर-कानूनी है ।''

इसके बाद तो पुलिस में खलबली मच गयी । दोपहर में पुलिस की कई गाड़ियाँ आश्रम से बाहर गयीं और आयीं । फिर शाम को ७:१५ बजे पुलिस द्वारा आश्रम व्यवस्थापक को एक प्रस्ताव दिया गया, जिसमें लिखा था कि 'हमें अहमदाबाद आश्रम में नारायण साँईं तथा अन्य दो लोगों के छिपे होने की आशंका है इसलिए सर्च करना चाहते हैं ।'

व्यवस्थापक द्वारा प्रस्ताव पर समय व दिनांक के साथ हस्ताक्षर किये गये। समय डालने पर पुलिस ने नाराजगी जतायी क्योंकि इससे उनकी गैर-कानूनी जाँच न्यायालय के सामने आ जायेगी। रात्रि ८:१५ बजे पूरे १४ घंटे बाद पुलिस वापस गयी।

पुलिस १३ घंटे बाद आश्रम में आने का कारण बताती है। किसी भी धार्मिक संस्था में घुसकर कारण बताये बिना ही ११ घंटे तक टेलीफोन कार्यालय बंद कर दिया जाता है। दर्शन के लिए आश्रम में आनेवाले भक्तों को १२ बजे तक आश्रम में प्रवेश नहीं दिया जाता है। क्या यह पुलिस ने नया कानून बनाया है ?

अमृत प्रजापति और महेन्द्र चावला, जिनका आश्रम के खिलाफ षड्यंत्र रचने का आपराधिक रिकॉर्ड है और पिछले ३ महीनों से जो लगातार मीडिया में आकर आश्रम व बापूजी पर झूठे, मनगढ़ंत और घृणित आरोप लगा रहे हैं, उनको लेकर सूरत पुलिस ने आश्रम की तलाशी क्यों ली ? उन लोगों को यदि कानून के तहत लाया गया था तो फिर वे चेहरे पर कपड़ा क्यों बाँधे हुए थे ? तलाशी के दौरान सरकारी कैमरे द्वारा ली गयी विडियो क्लिप मीडिया को कैसे मिली ? इतना ही नहीं, पुलिस ने मौन मंदिर (पिरामिड के आकार का एक कमरा जो ध्यान-भजन के लिए विशेष लाभदायी होता है) को गुप्त तहखाना बताया। जबकि वास्तविकता तो यह है कि आश्रम में ऐसा कोई तहखाना नहीं है। इस विषय में पहले ही सीआईडी द्वारा कई बार आश्रम की छानबीन करने के बाद आश्रम को क्लीन चिट दी गयी है। पुलिस ने देश की जनता को गुमराह क्यों किया ? इसमें गहरे षड्यंत्र की बू आ रही है।

विश्व-मांगल्य में रत पूज्य संतों के खिलाफ षड्यंत्र तथा उनके आश्रमों पर हो रहे अत्याचार आखिर कब समाप्त होंगे ? यह एक चर्चित सवाल है।

'ऋषि प्रसाद' ने ला दी घर में सुख-शांति

१० जुलाई २०१२ को आवश्यक काम के लिए मुझे कहीं जाना था। मैं ऑटो रिक्शा में बैठा तो मुझे शराब की दुर्गंध आयी। मैं समझ गया कि ऑटो चालक ने शराब पी रखी है पर मैं उस तरफ ध्यान न देते हुए 'ऋषि प्रसाद' पढ़ता रहा। गंतव्य स्थान पर पहुँचकर जब मैं पैसे देने लगा तो मेरे पास ५ रुपये छुट्टे नहीं थे। ऑटो चालक ने बोला कि "जो तुम्हारे पास पत्रिका है, वह दे दो।" मैंने उसको 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का वह अंक दे दिया।

वह ऑटोवाला २०-२१ दिन के बाद सुबह मुझे मिला तो वह मेरे पास आकर बोला : "भाई साहब ! आपने जो पत्रिका आशारामजी बापूवाली दी थी, मैंने वह जैसे ही पूरी पढ़ी वैसे ही मेरी शराब पीने की आदत छूट गयी। अब तो मेरा ऑटो भी कभी खाली नहीं रहता है। आज सुबह ८ बजे मैंने ऑटो चालू कर दिया था, अभी १० बजे हैं और ८०० रुपये का धंधा हो गया है।"

मैं चकित रह गया। मैंने देखा कि 'ऋषि प्रसाद' का जो अंक मैंने उसे दिया था, उसके रंगीन आवरण पृष्ठवाली गुरुदेव की तस्वीर को उसने फ्रेम में लगाकर ऑटो रिक्शा में लगाया हुआ है। फिर उसने ५०१ रुपये मुझे दिये और बोला कि "मुझे यह पत्रिका हर महीने चाहिए। मैं १५ साल से ऑटो चलाता हूँ, मेरी दो बेटियाँ हैं। १८ तारीख से पहले मैं १० रुपये भी घर में नहीं देता था लेकिन इस पत्रिका को पढ़ने के बाद हररोज ऑटो खर्चा छोड़ के १००० रुपये घर में देता हूँ और अब मैंने बैंक में खाता भी खोल लिया है। उसमें हररोज ३००-४०० रुपये जमा कर रहा हूँ।" उसने मुझे अपनी पासबुक भी दिखायी।

यह गुरुदेव के सत्संग के वचनों का ही प्रताप था, जिन्हें 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका में पढ़कर तथा उनके श्रीचित्र का दर्शन कर १५ दिन में शराबी आदमी का पूरा जीवन ही बदल गया।

- सुनील गड़कर, अहमदनगर, महाराष्ट्र,
मो. : ०८०५५३८५८०२

झूठी कहानियाँ बनानेवाले फँसेंगे कानूनी शिकंजे में

अमृत प्रजापति और महेन्द्र चावला के खिलाफ शिकायत दर्ज

अहमदाबाद, १ दिसम्बर। अमृत प्रजापति एवं महेन्द्र चावला ने न्यूज चैनलों में पूरे महिला आश्रम की महिलाओं के चरित्रहनन एवं साध्वियों के विरुद्ध आपत्तिजनक कथन किये थे तथा कई मनगढ़ंत कहानियाँ भी बनाकर बोली थीं। इनकी सीडी पेश कर सती अनसूया महिला आश्रम, अहमदाबाद की दो साध्वियों ने चाँदखेड़ा पुलिस स्टेशन में वैद्य अमृत प्रजापति के विरुद्ध भारतीय दंड विधान की धारा ३५४ (ए)(१)(ळीं), ५०९ एवं ११४ के अंतर्गत ३ परिवाद-पत्र प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार एक अन्य साध्वी ने महेन्द्र चावला के विरुद्ध भी उपरोक्त धाराओं के अंतर्गत फरियाद की है। शिकायत दर्ज करनेवाली साध्वियाँ ऊँचे और सम्पन्न घरों से हैं तथा एक पोस्ट ग्रेजुएट और दो बीएएमएस डिग्री प्राप्त आयुर्वेदिक वैद्य हैं।

आश्रम से निकाला गया अमृत प्रजापति कई आपराधिक प्रवृत्तियों में लिप्त पाया गया है और जेल भी जा चुका है। इसके गलत इलाज के चलते बड़ौदा में पीएच.डी. कर रहे एक नवयुवक हरिकृष्ण ठक्कर की अप्रैल २००९ में मृत्यु हो गयी थी।

महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की वारदातें एवं उन्हें बुरी नजर से देखना ऐसी करतूतों में लिप्त अमृत प्रजापति की अय्याश, लोभी और राक्षसी प्रवृत्ति समाज के सामने खुलकर आयी जब कोटा (राज.) में उसकी ऐसी करतूतों के लिए एफआईआर दर्ज हुई। धारा २९५ए, ४९९, ५००, ५०१, ३८४, २९६, २९८ के तहत अमृत वैद्य को गिरफ्तार किया गया था और वह केस आज भी चल रहा है। हाल ही में महिला आश्रम, छिंदवाड़ा की एक साध्वी ने अमृत वैद्य के विरुद्ध भा.दं.वि. की धारा २९८, ५०० एवं ५०५ व ए.आई.टी. एक्ट ६६ के अंतर्गत परिवाद-पत्र प्रस्तुत किया है।

आश्रम के प्रति द्वेष व दुर्भावना से ग्रस्त महेन्द्र चावला देशविरोधी धर्मांतरणवाली ताकतों के हाथों की कठपुतली बन के टीवी चैनलों में झूठी बयानबाजी कर महिला आश्रम तथा वहाँ की साधिकाओं को अपमानित करनेवाले शब्दों का उपयोग कर रहा है। इसकी शिकायत 'राज्य महिला आयोग' में भी की गयी थी। मा. न्यायालय, छिंदवाड़ा के समक्ष वहाँ की एक साध्वी के अधिवक्ता श्री अनुपम गढ़वाल द्वारा महेन्द्र को नोटिस जारी किया गया था। इन तथ्यों को देखते हुए ऐसे लोगों द्वारा मीडिया में आकर लगाये गये अनर्गल आरोपों की क्या कीमत है, यह समझदार व्यक्ति को बताने की जरूरत नहीं है।

ब्रजबिहारी उर्फ ठग भोलानंद आखिर पुलिस की गिरफ्त में

मीडिया में आकर संत श्री आशारामजी आश्रम, जम्मू में बच्चों के दफन होने का झूठा आरोप लगानेवाला व झूठे सबूत बनाने की साजिश रचनेवाला ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ विनोद उर्फ ठग भोलानंद जम्मू पुलिस की गिरफ्त में आ गया है। ठग भोला ने पुलिस के सामने जाँच के दौरान यह स्वीकार किया है कि आश्रम-परिसर की जमीन में श्मशान घाट से बच्चों का कंकाल लाकर दबाने हेतु साजिश रची गयी थी और बापूजी को इसी आड़ में अन्य झूठे मामलों में भी फँसाकर बदनाम करने की साजिश की जा रही है। यह खबर अधिकांश न्यूज चैनलों ने नहीं दिखायी। ठग भोला की १४ दिनों की पुलिस रिमांड के दौरान कई महत्त्वपूर्ण बातें सामने आयी हैं। उसने यह भी स्वीकार किया कि बापूजी को बदनाम करने के लिए मिशनरियाँ बहुत पैसे लगा रही हैं।

बुद्धि, शक्ति व नेत्रज्योति वर्धक प्रयोग

हेमंत ऋतु में जठराग्नि प्रदीप्त रहती है। इस समय पौष्टिक पदार्थों का सेवन कर वर्षभर के लिए शारीरिक शक्ति का संचय किया जा सकता है। निम्नलिखित प्रयोग केवल १५ दिन तक करने से शारीरिक कमजोरी दूर होकर शरीर पुष्ट व बलवान बनता है, नेत्रज्योति बढ़ती है तथा बुद्धि को बल मिलता है।

सामग्री : बादाम ५ ग्राम, खसखस १० ग्राम, मगजकरी (ककड़ी, खरबूजा, तरबूज, पेठा व लौकी के बीजों का समभाग मिश्रण) ५ ग्राम, काली मिर्च ७.५ ग्राम, मालकंगनी २.५ ग्राम, गोरखमुंडी ५ ग्राम।

विधि : रात्रि को उपरोक्त मिश्रण कुल्हड़ में एक गिलास पानी में भिगोकर रखें। सुबह छानकर पानी पी लें व बचा हुआ मिश्रण खूब महीन पीस लें। इस पिसे हुए मिश्रण को धीमी आँच पर देशी घी में लाल होने तक भूनें। ४०० मि.ली. दूध में मिश्री व यह मिश्रण मिला के धीरे-धीरे चुसकी लेते हुए पियें।

१५ दिन तक यह प्रयोग करने से बौद्धिक व शारीरिक बल तथा नेत्रज्योति में विशेष वृद्धि होती है। इसमें समाविष्ट बादाम, खसखस व मगजकरी मस्तिष्क को बलवान व तरोताजा बनाते हैं। मालकंगनी मेधाशक्तिवर्धक है। यह ग्रहण व स्मृति शक्ति को बढ़ाती है एवं मस्तिष्क तथा तंत्रिकाओं को बल प्रदान करती है। अतः पक्षाघात (अर्धांगवायु), संधिवात, कंपवात आदि वातजन्य विकारों में, शारीरिक दुर्बलता के कारण उत्पन्न होनेवाले श्वाससंबंधी रोगों, जोड़ों का दर्द, अनिद्रा, जीर्णज्वर (हड्डी का बुखार) आदि रोगों में एवं मधुमेह के कृश व दुर्बल रुग्णों हेतु तथा सतत बौद्धिक काम करनेवाले व्यक्तियों व विद्यार्थियों के लिए यह प्रयोग बहुत लाभदायी है। इससे मांस व शुक्र धातुओं की पुष्टि होती है।

अमृतफल आँवला

आँवला धातुवर्धक श्रेष्ठ रसायन द्रव्य है। इसके नित्य सेवन से शरीर में तेज, ओज, शक्ति, स्फूर्ति तथा वीर्य की वृद्धि होती है। यह टूटी हुई अस्थियों को जोड़ने

में सहायक है तथा दाँतों को मजबूती प्रदान करता है। इसके सेवन से आयु, स्मृति व बल बढ़ता है। हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। बालों की जड़ें मजबूत होकर बाल काले होते हैं।

ताजे आँवले के रस में नारंगी के रस की अपेक्षा २० गुना अधिक विटामिन 'सी' होता है। हृदय की तीव्र गति अथवा दुर्बलता, रक्त-संचार में रुकावट आदि विकारों

में आँवले के सेवन से लाभ होता है। आँवले के सेवन से त्वचा का रंग निखर आता है व कांति बढ़ती है।

वर्षभर किसी-न-किसी रूप में आँवले का सेवन अवश्य करना चाहिए। यह वर्षभर निरोगता व स्वास्थ्य प्रदान करनेवाली दिव्य औषधि है।

खास सर्दियों के लिए बुद्धिशक्तिवर्धक प्रयोग

* मालकंगनी (ज्योतिष्मती) उत्तम मेधावर्धक है। १ से १० बूँद मालकंगनी तेल बतासे पर डालकर खायें। ऊपर से गाय का दूध पियें । ४० दिन तक यह प्रयोग करने से ग्रहण व स्मृति शक्ति में लक्षणीय वृद्धि होती है। इन दिनों में उष्ण, तीखे, खट्टे पदार्थों का सेवन न करें। दूध व घी का उपयोग विशेष रूप से करें।

* बादाम बौद्धिक, शारीरिक शक्ति व नेत्रज्योति वर्धक है। रात को ४ बादाम पानी में भिगो दें। सुबह छिलके उतार के जैसे हाथ से चंदन घिसते हैं, इस तरह घिस के दूध में मिलाकर सेवन करें। इस प्रकार से घिसा हुआ १ बादाम १० बादाम की शक्ति देता है। बालकों के लिए १ से २ बादाम पर्याप्त हैं।

प्रतिदिन मोरारजी देसाई गिनकर सात काजू खाते थे। इससे अधिक बादाम या काजू खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे गुर्दे (किडनी) और यकृत (लीवर) कमजोर हो जाते हैं। बिना भिगोये अथवा बिना छिलके उतारे बादाम खाने से पाचनतंत्र पर अधिक जोर पड़ता है।

* काले तिल मस्तिष्क व शारीरिक दुर्बलता को दूर करते हैं। १० ग्राम काले तिल सुबह खूब चबा-चबाकर खायें। ऊपर से ठंडा पानी पियें। बाद में २-३ घंटे तक कुछ न खायें। इससे शरीर को खूब पोषण मिलेगा। दाँत व केश भी मजबूत बनेंगे। (पित्त प्रकृति के लोग यह प्रयोग न करें।)

* ५०-५० ग्राम गुड़ और अजवायन को अच्छी तरह कूटकर ६-६ ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली पानी के साथ लें। एक सप्ताह में ही शरीर पर फैले हुए शीतपित्त के लाल चकत्ते दूर हो जाते हैं।

श्री नारायण साँईं पर आरोप लगानेवाला खुद गिरफ्तार

एक महिला से छेड़छाड़ के मामले में इंदौर (म.प्र.) पुलिस ने सतीश पिता विशम्भर वाधवानी नाम के कत्था व्यापारी को हिरासत में लिया था। बाद में पता चला कि यह वही शख्स है जिसने श्री नारायण साँईं पर अश्लीलता के आरोप लगाये थे। महिला द्वारा पुलिस में शिकायत दर्ज करवाने के बाद पुलिस ने तुरंत कार्यवाही करते हुए बदमाश सतीश को धर दबोचा। महिला के पति का कहना है कि सतीश कॉलोनी में रहनेवाली महिलाओं पर बुरी नजर रखता व उनसे छेड़छाड़ करता रहता है। महिलाएँ बदनामी के डर से शिकायत नहीं करतीं।

(दबंग दुनिया, ३० नवम्बर)

सवाल यह उठता है कि ऐसे व्यक्तियों की अनर्गल बकवास को मीडिया में क्यों बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जा रहा है, जिनके खुद के चरित्र का अता-पता नहीं है?

पुण्यदायी तिथियाँ

२० दिसम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (प्रातः ७-०२ से २० दिसम्बर सूर्योदय तक)

२५ दिसम्बर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से २६ दिसम्बर सूर्योदय तक)

२९ दिसम्बर : सफला एकादशी (हजार वर्षों की तपस्या का फल देनेवाली)

८ जनवरी २०१४ : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि ९-१३ तक)

१४ जनवरी : मकर संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १-११ से सूर्यास्त तक) उत्तरायण, चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (सुबह ७-२२ से १५ जनवरी सुबह ७-५२ तक) (ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

१६ जनवरी : माघ स्नानारम्भ, गुरुपुष्यामृत योग (दोपहर १-१४ से १७ जनवरी सूर्योदय तक)

सिर्फ बापूजी नहीं, लाखों गरीबों-भक्तों की खुशियाँ भी जेल में

राजस्थान व गुजरात के कोटड़ा, सिरोही, गोगुंदा जैसे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र जहाँ दिवाली के दिनों की पूर्वसंध्याओं में प्रतिवर्ष पूज्य बापूजी स्वयं जाकर विशाल भंडारों का आयोजन करवाते थे इस वर्ष वहाँ के हजारों आदिवासी परिवारों की दिवाली बापूजी के बिना सूनी रही।

प्रसिद्ध न्यूज एंकर **उत्पल कलाल** ने कोटड़ा के नज़दीक के गाँवों का दौरा किया, लोगों से बातचीत की। प्रस्तुत है उनकी रिपोर्ट : ''दीपावली पर हम उदयपुर (राज.) के पासवाले आदिवासी गाँवों में गये। देखा कि वहाँ सभीके चेहरे पर उदासी छायी हुई है। वहाँ पर जो महिलाएँ थीं, हमने उनसे बातचीत की। एक वृद्ध महिला ने कहा : ''हमारे बापूजी को ये लोग पकड़कर ले गये हैं। हर दिवाली के पहले ही बापूजी यहाँ पर आते थे और भोजन, बहुत सारी चीजें और रुपये हमें दे जाते थे। हर दिवाली हमारी खुशी में मनती थी लेकिन इस बार ऐसा कुछ भी नहीं है। आज सुबह से हमने चूल्हा भी नहीं जलाया है।'' महिलाएँ सिसक-सिसककर रोने लगीं।

एक वृद्ध दादा ने बताया : ''बापूजी ने हमें जो दिया है, उसका मोल नहीं किया जा सकता है। पहले मैं शराबी-कबाबी था और घर में लड़ाई-झगड़ा होता रहता था, मैं लकवे से पीड़ित था लेकिन जब से बापूजी से सम्पर्क हुआ तब से हमारे सारे व्यसन छूट गये। बापूजी की कृपा से आज मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ। बापूजी हर बार दीपावली के त्यौहार पर आ के भंडारा करवाते हैं। नकद रुपये, कपड़े, अनाज, मिठाई आदि देते हैं। बापूजी ने हिन्दू धर्म और संस्कृति को बचाने का अथक प्रयास किया है। ऐसे श्रेष्ठ संतों पर जो आक्षेप लगाये जा रहे हैं वे निराधार हैं, बापूजी जल्द ही निर्दोष छूटकर आयेंगे। इस बार कोटड़ावासियों का दुर्भाग्य कहना चाहिए कि हम दीपावली पर बापूजी के दर्शन-सत्संग से वंचित रह रहे हैं और उनके हाथों जो लाभांश हम लोगों को मिलता वह नहीं मिल पाया। बापूजी हमारे भगवान हैं...'' ऐसा कहते हुए वृद्ध की आँखों से आँसुओं की धाराएँ बहने लगीं, उसका गला रुँध गया।

एक अन्य वृद्ध दादा ने अपने हृदय की व्यथा बतायी : ''पहले मैं तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि

खूब व्यसन करता था। शराब पीना, मांस खाना आदि दुर्गुण भी मुझमें थे लेकिन बापूजी से दीक्षा लेने के बाद मेरे सारे दुर्गुण छूट गये। हमारे यहाँ लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, गरीब हैं, थोड़ी-सी सुविधा को देखकर धर्मांतरण कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में बापूजी ने हिन्दू धर्म की रक्षा की है। बापूजी ने समाज को क्या नहीं दिया! बीड़ी, सिगरेट और तमाम तरह के जो व्यसन थे वे लोगों से छुड़ा दिये। जितना एक पिता के जेल जाने से एक पुत्र को दुःख होता है, बापूजी को षड्यंत्र करके जेल में रखने से हम लोगों को उससे ज्यादा दुःख है। हम चाहते हैं कि बापूजी ससम्मान वापस हमारे बीच में आयें और सत्संग की सरिता बहायें। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमारे निर्दोष बापूजी के साथ न्याय हो।''

यह एक गाँव नहीं, ऐसे तमाम गाँव जहाँ हम और आप लोग नहीं पहुँच पाते हैं, प्रशासन नहीं पहुँच पाता है, वहाँ आशारामजी बापू हर दिवाली पर जाकर इतने प्यार और करुणा से उनकी दिवाली में खुशियाँ ला देते हैं। **आज आशारामजी बापू के जेल में होने से मानो लाखों गरीब-आदिवासियों की खुशियाँ जेल में बंद हो गयी हैं।**'' विडियो देखने के लिए क्लिक करें :

http://goo.gl/Jp0hPZ

आज इन मीडियावालों को, जो निष्पक्ष खबरें दिखाने का दावा करते रहे हैं, उन्हें करोड़ों साधकों की पीड़ा तथा लाखों गरीब आदिवासियों का दुःख क्यों नहीं दिखायी देता ?

बापूजी का संदेश पाकर साधकों ने गरीबों की भी मनवायी दिवाली

करुणामूर्ति पूज्य बापूजी हर वर्ष दिवाली के दिनों में अभावग्रस्त आदिवासी इलाकों में जाकर गरीबों में अनाज, कपड़े, बर्तन, मिठाई, गर्म भोजन के डिब्बे, नकद दक्षिणा, दीपक, तेल, माचिस एवं विभिन्न जीवनोपयोगी वस्तुओं के वितरण व विशाल भंडारों के आयोजन के साथ ही ब्रह्मज्ञान का सत्संग देकर गरीबों की भी दिवाली सदा सुखमय करते आये हैं। तभी तो उन आदिवासियों को यह पक्का हो गया है कि **दिवाली आयी तो बापू आये, बापू आये तो दिवाली आयी।**

इससे वहाँ के लोगों का जीवन उन्नत होने लगा और धर्मांतरणवालों का बोरिया-बिस्तर बँध गया। राष्ट्र-विखंडन चाहनेवाली विदेशी ताकतों को यह बात गले नहीं उतरी और बापूजी के इन दैवी कार्यों को रोकने हेतु उन्होंने षड्यंत्र रचना शुरू कर दिया। सुनियोजित साजिश के तहत पूज्य बापूजी को बेबुनियाद, झूठे आरोपों में फँसाकर जेल में रखा गया। परंतु वे बापूजी के हृदय में गरीबों के लिए जो प्रेम है, उसे भला कैसे कम कर सकते हैं ? तभी तो जेल में होने पर भी बापूजी को उन आदिवासियों का पूरा खयाल था और संदेशा भिजवाया कि ''सभी साधक जैसे पहले दिवाली मनाते थे, वैसे ही अभी भी दिवाली मनायें।'' फिर तो चल पड़ा भारतभर के गरीबों में दिवाली मनाने का सिलसिला। बापूजी की अनुपस्थिति में भी उनके प्यारे साधक-शिष्यों ने अपने गुरुदेव के निर्देश को शिरोधार्य कर पूरी तत्परता से अपने-अपने क्षेत्रों में दीपावली पर गरीबों की सेवा का अभियान यथावत् चलाया।

संत श्री आशारामजी आश्रम, ग्वालियर द्वारा नयापुरा, जाखोदी, साँख, कैंट, रेहट, तकिया का पुरा, बेरखेड़ा, भाटपुरा, सिरसा, बड़ का दोना सहित १२ आदिवासी गाँवों में दिवाली के निमित्त गरीबों में मिठाई, खील-बताशे, तुलसी गोलियाँ, बच्चों के लिए कपड़े, बिस्कुट, फुलझड़ी एवं जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया। साथ ही भगवन्नाम-कीर्तन करवाकर पूज्य बापूजी द्वारा बतायी गयीं घर में सुख-शांति बढ़ाने की युक्तियाँ भी बतायी गयीं।

पुणे, बदलापुर जि. थाने, जवाहर जि. थाने, नासिक, उल्हासनगर, लासलगाँव जि. नासिक,

वर्धा (महा.), अम्बाला, गोहाना (हरियाणा), मुकेरियाँ, पटियाला (पंजाब), पंचेड़, पेटलावद जि. झाबुआ (म.प्र.), लड्डूगाँव जि. कालाहाँडी, राऊरकेला, रेमुंडा जि. सुंदरगढ़ (ओड़िशा), भिलाई, दुर्ग (छ.ग.), कोटा, उदयपुर (राज.), धानपुर जि. दाहोद, कामरेज-सूरत, वासद जि. बड़ौदा (गुज.), मोदीनगर (उ.प्र.), हैदराबाद आदि स्थानों पर भी गरीबों में जीवनोपयोगी सामग्री जैसे अनाज, चावल, वस्त्र, चप्पल, तेल, दीपक, साबुन, कम्बल, टोपी, मिठाई, सत्साहित्य आदि का वितरण किया गया। रायपुर (छ.ग.) में अन्य वस्तुओं के साथ घड़ी व गर्म भोजन के डिब्बे भी बाँटे गये। दिल्ली में इन वस्तुओं के वितरण के अलावा नुक्कड़ नाटिका के माध्यम से लोगों तक षड्यंत्र की हकीकत भी पहुँचायी गयी। बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.) में 'महिला मंडल' द्वारा गरीबों में वस्त्र, कम्बल, दीपक, तेल, गर्म भोजन के डिब्बों, मिठाई आदि का वितरण किया गया। गुजरात के दाहोद जिले के धानपुर, मैद्री, चाकिसणा, बैणा, संतरामपुर एवं पंचमहाल जिले के मोरवा हडप, मौरा, जतनना मुवाड़ा आदि स्थानों पर साध्वी भाविनी बहन का सत्संग एवं भंडारों का आयोजन किया गया।

जोधपुर जेल के बाहर मनायी गयी अनोखी दिवाली !

आमतौर पर दीपावली की रातों में वीरान रहनेवाली जेल की सड़कें इस बार बापूजी के शिष्यों ने श्रद्धा-भक्ति के साथ जलाये गये दीपों से जगमगा दीं। ३ नवम्बर को जेल के बाहर अपने सद्गुरु के दर्शन के लिए व्याकुल हजारों भक्तों की गीली आँखें, पूजन के लिए हाथों में दीपक और भजन-आरती की ध्वनि... बड़ा ही अद्भुत नजारा था जोधपुर कारागृह के बाहर !

जोधपुर जेल में दीपावली को कुछ भक्तों को बापूजी के दर्शन का सौभाग्य मिला। बापूजी के दर्शन करते हुए भक्तों की आँखों से अश्रुधाराएँ बह चलीं और रुकने का नाम ही नहीं ले रही थीं। पूज्य बापूजी ने उन्हें दीपावली की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि ''जिस प्रकार महापुरुषों के जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आयीं पर वे टिकी नहीं, उसी प्रकार यह परिस्थिति भी गुजर जायेगी । विकट परिस्थितियाँ तो सभीके जीवन में आती हैं। यह समय भी नहीं रहेगा। आप लोग दीपावली अच्छे से मनाना।''

दिवाली शिविर में उमड़े हजारों भक्त

आज भले ही कुप्रचारक बापूजी पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाकर समाज को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन भक्तों के सामने उनकी दाल किसी भी तरह से गलनेवाली नहीं है। इसका प्रमाण है दीपावली पर अहमदाबाद आश्रम में दिनांक ४ से १० नवम्बर तक ७ दिवसीय 'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर' में उमड़ी हजारों भक्तों की भीड़। यहाँ देशभर से आये हजारों बालक-बालिकाओं ने सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान किया। यहाँ उन्होंने मंत्रजप, आसन, प्राणायाम व उज्ज्वल भविष्य निर्माण की विभिन्न युक्तियाँ सीखीं और भोजन में देशी गाय के दूध की खीर का प्रसाद पाया। साथ ही भजन-कीर्तन, गायन, वक्तृत्व तथा लिखित प्रतियोगिता आदि में बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। सभी बच्चों व साथ में आये अभिभावकों ने लगातार ५ दिनों तक २१ कुंडी महायज्ञ का लाभ लिया। गोपाष्टमी के दिन सभी बच्चों ने गौशाला में जाकर गायों को गोग्रास खिलाया तथा गौ-सेवा भी की। भारतीय-संस्कृति के ऐसे दिव्य संस्कार व पवित्र वातावरण का अनुपम लाभ और कहाँ मिल सकता है ?

१० नवम्बर को देशभर की प्रमुख संत श्री आशारामजी गौशालाओं में गोपाष्टमी के निमित्त गायों को सजा-धजाकर पूजन किया गया व उन्हें

दलिया, चना, चापड़, गुड़ आदि खिलाया गया। अहमदाबाद, मोलेथा, सूरत, बोड़ेली (गुज.), प्रकाशा, दोंडाईचा, रायता, औरंगाबाद, मालेगाँव, पुणे (महा.), कोटा, निवाई, चिड़ावा जि. झुंझुनू, चुरु, अनूपगढ़, विजयनगर (राज.), श्योपुर, सागर, इंदौर, रतलाम, सुसनेर, छिंदवाड़ा, भोपाल (म.प्र.), बिलासपुर, रायपुर (छ.ग.), लुधियाना, कानपुर, रजोकरी-दिल्ली आदि स्थानों पर भी संत श्री आशारामजी गौशालाओं में सामूहिक गौ-पूजन का विशेष कार्यक्रम रखकर गायों के संरक्षण एवं संवर्धन की महत्ता व उपयोगिता का संदेश समाज को दिया गया। अहमदाबाद आश्रम के साधकों तथा अनसूया आश्रम की साधिकाओं ने भी आसपास के गाँवों की गायों को गोग्रास खिलाया।

विशाल अन्नक्षेत्र का आयोजन

गिरनार परिक्रमा के भक्तों के लिए संत श्री आशारामजी आश्रम, राजकोट द्वारा साल में दो बार अन्नक्षेत्र लगाया जाता है। पिछले २२ वर्षों से चले आ रहे इस अन्नक्षेत्र को इस वर्ष भी भावनाथ तलहटी पर १३ से १५ नवम्बर तक चलाया गया। इसमें रोज लगभग ६-७ हजार लोगों को भोजन कराया गया।

अनोखी देवदिवाली

१७ नवम्बर, कार्तिकी पूर्णिमा पर देशभर से आये साधकों ने दीपावली की तरह जोधपुर जेल को दीपकों से सजा दिया। इसी दिन पूज्य बापूजी के समर्थन में जंतर-मंतर, दिल्ली में विशाल 'भारत विश्वगुरु संत-सम्मेलन' का आयोजन हुआ। इसमें देशभर से आये विभिन्न सम्प्रदायों के संतों-महंतों के साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, बुद्धिजीवी तथा वरिष्ठ पत्रकार उपस्थित थे। सम्मेलन में उपस्थित लाखों लोगों ने साढ़े तीन महीनों से चल रहे षड्यंत्र की विफलता का प्रमाण दे दिया।

नारायण साँईं को भगौड़ा कहना गलत : उच्च न्यायालय गैर-जमानती वॉरंट रद्द

गुजरात उच्च न्यायालय ने गुजरात पुलिस और सूरत के सत्र न्यायालय को गलत ठहराते हुए साँईंजी के खिलाफ गैर-जमानती वॉरंट को रद्द कर दिया और साथ ही घोषित किया कि साँईंजी शुरुवात से लेकर आखिरी तक भगौड़े थे ही नहीं, उनको भगौड़ा कहना बिल्कुल गलत था। इससे पहले इस संदर्भ में गुजरात उच्च न्यायालय ने गुजरात सरकार को नोटिस जारी किया था और 'नारायण साँईं के खिलाफ अरेस्ट वॉरंट क्यों निकाला ?' इसका जवाब माँगा था। साँईं के वकील ने कहा था कि 'साँईंजी अपने संवैधानिक अधिकार का उपयोग कर रहे हैं। उन्हें गिरफ्तारी देने का कोई सवाल ही नहीं उठता। उच्च न्यायालय में उनकी जमानत अर्जी लगी हुई है, जिसका कोई निर्णय नहीं आया है। ऐसी स्थिति में वॉरंट जारी करना साँईंजी को अग्रिम जमानत के अधिकार से वंचित रखने के समान है। सूरत पुलिस केवल गिरफ्तारी को लेकर साँईंजी के पीछे पड़ी है।'

(गुजरात समाचार, राजस्थान पत्रिका तथा टाइम्स ऑफ इंडिया के आधार पर)

मीडिया द्वारा लोगों को भ्रमित कर पूज्य बापूजी तथा उनके परिवार के विरुद्ध एक माहौल पैदा किया जा रहा है। इसका जागरूक जनता को विरोध करना चाहिए तथा सही जानकारी जनमानस तक पहुँचाकर देशहितकारी कार्य करना चाहिए।

संघर्ष से अपनी इच्छापूर्ति करो- यह स्वार्थियों की, संकीर्ण मानसिकतावालों की मान्यता बहुत छोटी जगह पर बैठकर होती है। वास्तव में संघर्ष करके अपनी इच्छापूर्ति करने के बाद भी दुःख नहीं मिटता, चिंता नहीं मिटती, विकार नहीं मिटते, अशांति नहीं मिटती। उस अशांति, विकार तथा बदले की भावना से मरने के बाद भी न जाने किस-किस रूप में एक-दूसरे से प्रतिशोध लेने के लिए न जाने किन-किन योनियों में भटकते हैं, मारकाट करते रहते हैं, तपते-तपाते रहते हैं कुत्तों की नाईं।

आज की दौड़-धूपभरी जिंदगी जीनेवालों के पास इतना समय कहाँ है कि वे शास्त्रों में वर्णित विधि-विधान से पतितपावनी तुलसी का सेवन कर सकें । यह ध्यान में रखते हुए आश्रम व गौशाला के पवित्र वातावरण में उपजी सर्वरोगहारी तुलसी से होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा छोटी-छोटी मीठी गोलियों के रूप में बनायी गयी हैं :

होमियो तुलसी गोलियाँ

इनका नियमित सेवन –

✲ स्मरणशक्ति व पाचनशक्ति वर्धक।

✲ हृदयरोग, दमा, टी.बी., हिचकी, विष-विकार, ऋतु-परिवर्तनजन्य सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी, खून की कमी, दंत रोग, त्वचासंबंधी रोग, सिरदर्द, प्रजनन व मूत्रवाही संस्थान के रोगों में लाभकारी।

✲ कुष्ठरोग, मूत्र व रक्त विकार आदि में लाभदायी । हृदय, यकृत (लीवर), प्लीहा व आमाशय हेतु बलवर्धक।

✲ बच्चों का चिड़चिड़ापन, जीर्णज्वर, सुस्ती, दाह आदि में उपयोगी।

✲ संधिवात, मधुमेह (डायबिटीज), यौन-दुर्बलता, नजला, सिरदर्द, मिर्गी, कृमि रोग एवं गले के रोगों में लाभदायी।

✲ भारी व्यक्ति का वजन घटाता है एवं दुबले-पतले व्यक्ति का वजन बढ़ाता है।

✲ हर आयुवर्ग के रोगी तथा निरोगी, सभीके लिए लाभदायी।

✲ कफ व वायु का विशेष रूप से नाशक। पित्त प्रकृतिवालों को सेवन करनी हो तो २-२ गोली सुबह-शाम आधा कप पानी में घोल के लें।

इसके अलावा ये अनेक बीमारियों में अत्यंत लाभदायी हैं, जिनकी जानकारी के लिए इन गोलियों के साथ दिये गये जानकारी पर्चे को पढ़ें।

सम्पर्क : (०१७०४) २२३३४३, ०९३१८१९०४६७

हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश

– श्री रमेश मोदी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

आज ७४ वर्ष के संत के साथ केवल अमानवीय नहीं, बल्कि दानवताभरा व्यवहार हो रहा है। कोई भी संत थोड़ा भी खुलकर आ जायें, सच्चाई बोलना शुरू करें तो वे बच नहीं सकते । आज किसी भी संत पर प्रहार होता है तो सभी संतों को एकजुट हो जाना चाहिए।

मीडिया का एक ही काम बचा है कि हिन्दू संतों के बारे में खूब कुप्रचार चलाओ। एक तरह से पूरा मीडिया विदेशी है। ४९-४९ प्रतिशत शेयर उनके हैं, सीधी बात है ऐसा ही करेंगे । बापूजी को हाइलाइट किया जा रहा है क्योंकि वे हिन्दुत्व की बात करते हैं। बापू हिन्दुत्व की बात करना बंद कर दें, देशहित को भूल जायें तो पूरे झगड़े खत्म हो जायेंगे। यह हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश है।

शरीर छूट जानेवाला है और आत्मा अमर है, इसको जानने के बाद वह पुरुष शरीर की वाहवाही अथवा शरीर के भोग के लिए क्यों अपने को पचायेगा ! यह चल रहा था और गुरुजी ने जरा-सी कृपादृष्टि डाली और अपने घर में घर दिखला दिया। तरंग ने अपने को सागर जान लिया, घड़े के आकाश ने अपने को महाकाश के रूप में देख लिया। जीव की कल्पना हटी और ब्रह्म हो गया।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर कार्य रहे ना शेष।

धनभागी हैं वे, जो संत-दर्शन की महत्ता जानते हैं, उनके दर्शन-सत्संग का लाभ लेते हैं, उनके द्वार पर जा पाते हैं, उनकी सेवा कर पाते हैं और धन्य है यह भारतभूमि, जहाँ ऐसे आत्मारामी संत अवतरित होते रहते हैं।

पूज्य बापूजी सनातन धर्म के रक्षक हैं और ये लोग भक्षक हैं । बापूजी धर्म-परिवर्तन नहीं होने दे रहे हैं । वे गौ-रक्षा, हिन्दुत्व की रक्षा के लिए सचेत करते हैं इसलिए बापूजी को निशाना बनाया जा रहा है । - श्री रुद्रपुरीजी महाराज

हमारे बापूजी जो वयोवृद्ध हैं उन पर घृणित आरोप लगाये जा रहे हैं, ये सारे-के-सारे आरोप निराधार हैं । बापू बहुत जल्दी ही निर्दोष बरी होंगे ।

- संत कृपारामजी महाराज, गुरुकृपा आश्रम, जोधपुर

परम पूज्य बापूजी ६ करोड़ साधकों को इतने वर्षों से साधना करा रहे हैं, क्या यह बगैर साधना के, बगैर संस्कार के, बगैर सत्य के सम्भव है ?

- डॉ. सुरेश गुंजाल, सनातन हिन्दू जनजागृति समिति

हमारे साथ हमारे दिलों में बापूजी के लिए प्यार है । यह बात सभी जानते हैं कि षड्यंत्र हो रहे हैं और ऐसे समय में जो भी कर्तव्य हो वह हम पूरा करने को तैयार हैं ।

- संत बाबा हरपाल सिंहजी, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा

पूज्य बापूजी के साथ जो हो रहा है यह अपराध है और इस अपराध को संत-समाज कभी क्षमा नहीं करेगा । अखाड़ा बापूजी के ऊपर हो रहे अत्याचार का पुरजोर विरोध करेगा । षड्दर्शन साधु समाज भी इसके विरोध में है और बापूजी को सबका पूर्णतः सहयोग है ।

- श्री राजेन्द्रशरण देवाचार्य, प्रवक्ता, निम्बार्क पीठ, मथुरा

बापूजी को परेशान किया जा रहा है क्योंकि वे हिन्दुत्व की बात करते हैं । बापू हिन्दुत्व की बात करना बंद कर दें, देशहित को भूल जायें तो पूरे झगड़े खत्म हो जायेंगे । यह हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश है । - श्री रमेश मोदी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

आज पूज्य बापूजी के साथ जो यह जुल्म हो रहा है, उन पर झूठा केस लगाया जा रहा है यह सहने के काबिल नहीं है । यदि डरते रहे तो बाकी संतों की भी बारी जल्दी आनेवाली है । इसलिए मैं फिर से प्रार्थना करना चाहूँगा कि हमारे समाज में बहुत ताकत है, बस हम सब इकट्ठे होकर इसका विरोध करें । - श्री नरेश पंडित, प्रधान, बजरंग दल (पंजाब)

कानून में यह माना गया है कि अगर एफआईआर उसी दिन नहीं होती है तो ये चीज संदेहास्पद है । आप शहर में थे और आपने ५ दिन लगा दिये ? यानी आपके पीछे एक ऐसा तंत्र काम कर रहा है जिसने बापू को फँसाने के लिए योजना की सेटिंग की है । - श्रीमती सुमन सिंहजी

राष्ट्रीय सचिव, शिवानंद तीर्थधर्म सेवा-समिति तथा वकील, पटना हाईकोर्ट

मीडिया नैतिकता के मानकों का पालन करे ।

- श्री प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति

आशारामजी की खबर में अतिरेक हुआ है इसमें कोई दो राय नहीं है । खबरों के व्यापारीकरण पर कुछ अंकुश की जरूरत है । - श्री प्रमोद जोशी, वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

मीडिया को सारी दिक्कत सार्वजनिक प्रतिष्ठानों से इसलिए है क्योंकि कई प्रतिष्ठानों ने अलग से विज्ञापन के पैकेज न्यूज चैनल्स को नहीं दिये । - श्री विनीत कुमार, मीडिया विश्लेषक

निर्दोष पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए दिल्ली में पिछले तीन महीनों से सतत चल रहा जन-सत्याग्रह

जन-सत्याग्रह व संत-सम्मेलनों में बड़ी संख्या में संत-समाज, सामाजिक संगठनों के प्रमुख एवं जागरूक जनता की उपस्थिति

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. ✻ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✻ Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.